अध्याय 10

सेवा क्षेत्र

भारत का सेवा क्षेत्र, जोकि वैश्विक वित्तीय संकट के दौरान और उसके तुरंत बाद भी समुत्थानशील बना रहा, लगातार बनी वैश्विक और घरेलू मंदी के दबाव में आ गया जिससे पिछले दो वर्षों में, इसमें सामान्य से कम वृद्धि रही। तथापि, 2014-15 में पुनरुद्धार की झलक दिखाई दे रही है जहां वैश्विक सकल घरेलू उत्पाद की वृद्धि और व्यापार में हुए सुधार के संकेत और सूचना प्रौद्योगिकी, विमानन, परिवहन साधन और खुदरा कारोबार जैसे कुछेक प्रमुख सेवाओं में प्रतिबिम्बित हो रहे हैं। विभिन्न सूचकांक और अनुमान भी भारत के सेवा कारोबार में सुधार दर्शाते हैं।

10.2 सेवा क्षेत्र जिसमें सकल घरेलू उत्पाद (स.घ.उ.) का लगभग 57 प्रतिशत योगदान है, ने गत कुछ वर्षों में तीव्र प्रगति की है और अर्थव्यवस्था की सबसे बड़ी और तेज उभरते क्षेत्र के रूप में उभरकर सामने आया है। इसके अतिरिक्त, भारत के सकल घरेलू उत्पाद में प्रमुख क्षेत्र होने के चलते, सेवा क्षेत्र ने विदेश निवेश प्रवाहों, निर्यातों और रोजगार में काफी योगदान दिया है। भारत के सेवा क्षेत्र में अनेक क्रियाकलाप आते हैं जिनके कई विशेषताएं और आयाम हैं। सूचना प्रौद्योगिकी और दूरसंचार जैसी कुछ सेवाएं ऐसी हैं जिनमें उच्च प्रौद्योगिकी और विशेषज्ञता की जरूरत होती है, जबकि हज्जामों और नलकारों जैसी कुछ सेवाएं सामान्य हैं। परिवहन जैसी कुछेक सेवाएं औद्योगिक क्षेत्र के साथ अधिक जुड़ी हैं और कुछ पर्यटन जैसे क्षेत्र अधिक रोजगार से जुड़े हुए हैं। रेलवे और पत्तन जैसी कुछ सेवाएं अवसंरचना की परिभाषा के अंतर्गत आती हैं, जबकि निर्माण जैसी कुछ सेवाएं उद्योग के अंतर्गत आती हैं। इस प्रकार, इसमें कई अंतर्वेशन और बहिर्वेशन की सीमा रेखाएं हैं। इस अध्याय में न केवल विभिन्न सेवा पहलुओं का उल्लेख है, बल्कि कई महत्वपूर्ण सेवाओं का भी वर्णन है।

सेवा क्षेत्रः अन्तरराष्ट्रीय तुलना

वैश्विक सेवाएं—सकल घरेलू उत्पाद

10.3 2012 में वैश्विक सेवाओं के सकल घरेलू उत्पाद में 2011 की तुलना में अचानक वृद्धि हुई और 2.7 से बढ़कर 3.8 प्रतिशत (स्थिर मूल्यों पर) हो गया और 2012 में इसमें 72.7 ट्रिलियन अमरीकी डालर वैश्विक स.घ.उ. में (चालू मूल्यों पर) 65.9 प्रतिशत की मामूली वृद्धि हुई। समग्र स.घ.उ. की तरह, सकल घरेलू उत्पाद सेवाओं में भी यू.एस. का पहला स्थान है, जापान और चीन, क्रमशः दूसरे और तीसरे स्थान पर हैं। सकल घरेलू उत्पाद (चालू मूल्यों पर) के संदर्भ में विश्व के शीर्ष 15 देशों में, भारत का स्थान 10वां हैं और 2012 में सकल घरेलू उत्पाद में 12वां स्थान रहा। तथापि, 2001 से 2012 की 11 वर्ष की अवधि के दौरान, भारत अपने सीएजीआर (संयुक्त वार्षिक वृद्धि दर) के साथ चीन के 10.9 प्रतिशत से कुछ

ही कम 9.0 प्रतिशत पर दूसरा सबसे तेज बढ़ता सेवा क्षेत्र है। रूस का स्थान 5.4 प्रतिशत के साथ तीसरा रहा जिसमें दूसरे स्थान से काफी अंतर है। यद्यपि 2011 की तुलना में चीन के 8.1 प्रतिशत के बाद भारत के 7.2 प्रतिशत से 2012 में सेवा क्षेत्र में सबसे उच्च वृद्धि दर रही, फिर भी दोनों देशों के लिए 2011 के मुकाबले मामूली गिरावट रही। इसके विपरीत, अमरीकी सेवा सेक्टर 2012 में बढ़कर 6.5 प्रतिशत हो गई। जोकि 2011 की तुलना में तीन गुणा से अधिक रहा। जापान और रूस की सेवा के विकास में भी वृद्धि रही। सकल घरेलू उत्पाद सेवाओं के संदर्भ में शीर्ष 15 देशों में, केवल चीन के अपने कुल सकल घरेलू उत्पाद में उसका (चीन) हिस्सा 2012 में 44.6 प्रतिशत रहा। यह 50 प्रतिशत की तुलना में कम है (सारणी 10.1)

सारणी 10.1: सेवाओं में निष्पादन: अन्तरराष्ट्रीय तुलना

देश		स्थान		सेवा वृद्धि दर				सेवाओं का हिस्सा					2013 में कुल निर्यात में सेवाओं का हिस्सा	सेवा निर्यात वृद्धि			
		समग्र जीडीपी	सेवाएं जीडीपी	(प्रतिशत) वर्षा-नु-वर्ष			सीजीएआर 2001-12	जीडीपी में			सेवाओं में			(प्रतिशत) वर्षा-नु-वर्ष			सीए जीआर 2001-13
				2001	2011	2012		2001	2011	2012	2001	2012		2001	2012	2013	
1	संयुक्त राज्य	1	1	2.9	1.9	6.5	2.1	77.2	78.9	79.2	75.0	81.2	29.5	-3.6	5.4	5.0	7.7
2	चीन	2	3	10.3	9.5	8.1	10.9	40.5	43.4	44.6	27.7	35.7	8.6	9.1	8.4	8.7	16.6
3	जापान	3	2	1.8	0.5	2.4	0.6	69.9	72.7	72.3	63.9	69.7	16.8	-6.9	0.0	1.0	7.0
4	जर्मनी	4	4	2.5	2.8	1.4	1.2	69.0	68.5	66.6	64.6	70.2	16.5	5.6	-1.1	8.0	10.8
5	फ्रांस	5	5	1.8	2.4	0.5	1.4	75.0	79.2	79.2	69.9	74.9	28.7	-0.5	-8.1	8.3	9.4
6	यू॰के॰	6	6	2.7	1.5	1.4	2.1	73.3	77.9	78.8	73.8	78.9	34.9	-0.8	-1.5	0.6	7.8
7	ब्राजील	7	8	1.8	2.7	1.7	3.6	67.1	67.0	68.5	59.4	62.7	13.4	-2.7	4.6	-1.7	12.9
8	रूस	8	10	3.3	3.3	4.8	5.4	55.7	58.9	60.1	58.6	62.3	11.1	17.3	6.8	12.7	15.9
9	इटली	9	7	2.6	0.9	-1.5	0.4	69.9	73.3	73.8	63.1	68.5	17.5	2.1	-2.2	5.6	5.6
10	भारत	10	12	7.5	8.2	7.2	9.0	51.3	55.7	56.9	24.0	28.1	32.8	4.8	5.4	4.8	20.2
11	कनाडा	11	9	3.5	2.4	1.8	2.6	65.8	71.2	71.1	74.7	76.5	14.5	-3.6	-0.9	0.3	6.2
12	आस्ट्रेलिया	12	11	3.9	3.3	2.9	3.2	69.6	69.4	69.5	74.2	75.5	17.1	-8.9	2.7	-0.1	9.4
13	स्पेन	13	13	3.6	1.2	-0.3	2.5	64.8	70.9	71.6	62.0	74.9	31.4	6.0	-3.8	5.5	8.3
14	मैक्सिको	14	14	-0.2	4.6	4.5	3.0	63.3	60.3	60.1	56.1	61.9	4.9	-7.5	3.6	21.3	4.0
15	दक्षिण कोरिया	15	15	4.3	2.6	2.5	3.4	58.5	57.5	57.7	62.6	76.4	16.6	-4.9	17.3	1.3	11.8
	विश्व			**2.8**	**2.7**	**3.8**	**2.6**	**68.9**	**65.9**	**65.9**	**39.1**	**44.0**	**19.8**	**0.1**	**2.2**	**5.5**	**9.9**

स्रोत: सकल घरेलू उत्पाद के लिए संयुक्त राज्य राष्ट्रीय लेखा सांख्यिकी से, रोजगार के लिए विश्व बैंक और आईएलओ डाटाबेस से और सेवा व्यापार के लिए डब्ल्यूटीओ डाटाबेस से संगणित (1 जून, 2014 को परिगणित)

टिप्पणी: स्थान व हिस्सा चालू मूल्यों (2012) पर आधारित है; वृद्धि दरें स्थिर मूल्यों पर (अमरीकी डालर) पर आधारित हैं; सकल घरेलू उत्पाद सेवाओं में निर्माण क्षेत्र शामिल नहीं है; 2012 में नियोजन आंकड़े हेतु: चीन, ब्राजील और मेक्सिको के लिए 2011 आंकड़ा, संयुक्त राज्य अमरीका, जापान, दक्षिण कोरिया के लिए 2010, रूस और ऑस्ट्रेलिया के लिए 2009 और कनाडा के लिए 2008 दिए गए हैं। 2001 के लिए भारत का रोजगार आंकड़ा 2000 के है। 2001 के लिए वैश्विक रोजगार शेयर का आंकड़े 2000 के है।

वैश्विक सेवाएं रोजगार

10.4 वैश्विक सकल घरेलू उत्पाद में सेवाओं की हिस्सेदारी 65.9 प्रतिशत रही। किन्तु 2012 में रोजगार में हिस्सेदारी केवल 44.0 प्रतिशत रही। तथापि, 15 शीर्ष देशों में (सकल घरेलू उत्पाद) के संदर्भ में), भारत और चीन को छोड़कर, सकल घरेलू उत्पाद सेवाओं और रोजगार सेवाओं दोनों की हिस्सेदारी अधिक रही और एक दूसरे के आस-पास रही। चीन में, आय सेवाएं और रोजगार सेवाएं दोनों की हिस्सेदारी कम रही। भारत के मामले में सेवाओं के क्षेत्र में 2012 में 56.9 प्रतिशत की आय में उच्च हिस्सेदारी रही जबकि रोजगार में 28.1 प्रतिशत की कम हिस्सेदारी रही और दोनों के बीच अंतर 2001 में 27.3 प्रतिशत बिन्दुओं से बढ़कर 2012 में 28.8 प्रतिशत बिन्दु हो गई।

वैश्विक सेवा कारोबार

10.5 2001 से 2013 तक गत 12 वर्षों में 9.9 प्रतिशत के सीएजीआर के साथ जोरदार वृद्धि के पश्चात्, वैश्विक सेवा निर्यात वृद्धि घटती-बढ़ती रही है। 2001 में यह

0.1 प्रतिशत रही जो बढ़कर 2004 में 21.5 प्रतिशत के उच्च स्तर पर पहुंच गयी थी। यह तेजी से कम होकर 2009 में नकारात्मक 9.4 प्रतिशत हुई, यह तीव्र गति से पुनः वापस 2010 में 9.8 प्रतिशत और 2011 में 12.2 प्रतिशत पर आ गयी, लेकिन 2012 में घटकर 2.2 प्रतिशत रह गई। यह 2013 में फिर से बढ़कर 5.5 प्रतिशत हो गयी। सेवाओं के शीर्ष निर्यातकों में, 20.2 प्रतिशत की सीएजीआर के साथ भारत में सबसे तेज वृद्धि हुई जिसके बाद 16.6 प्रतिशत पर चीन का स्थान रहा। 2013 में, भारत की सेवा निर्यात वृद्धि 2012 में 5.4 प्रतिशत से गिरकर 4.8 प्रतिशत रह गई जबकि चीन की निर्यात वृद्धि 8.4 प्रतिशत से मामूली रूप से सुधरकर 8.7 प्रतिशत हो गयी।

वैश्विक सेवा क्षेत्र में विदेशी प्रत्यक्ष निवेश

10.6 संयुक्त राष्ट्र व्यापार एवं विकास सम्मेलन (अंकटाड) विश्व निवेश रिपोर्ट, 2014 के अनुसार, 2013 में वैश्विक विदेशी प्रत्यक्ष निवेश (एफडीआई) प्रवाह 1.45 ट्रिलियन अमरीकी डालर रहा 9 प्रतिशत बढ़ा। यह 2012 में गिरावट के बाद उत्साहजनक प्रवृत्ति दर्शाता है। विकासशील देशों ने 2013 में अपना प्रभुत्व बनाए रखा और 778 बिलियन अमरीकी डालर अथवा कुल एफडीआई प्रवाह का 54 प्रतिशत प्राप्त किया। अंकटाड का अनुमान है कि कुल एफडीआई प्रवाह 2014 में 1.6 ट्रिलियन अमरीकी डालर, 2015 में 1.7 अमरीकी डालर और 2016 में 1.8 ट्रिलियन अमरीकी डालर तक बढ़ सकता है, विकसित देशों की अपेक्षा अधिक वृद्धि हो सकती है। कुछ उभरते बाजारों की दुर्बलता और नीतिगत अनिश्चितता से संबंधित जोखिम तथा क्षेत्रीय अस्थिरता एफडीआई की वृद्धि को नकारात्मक रूप से प्रभावित कर सकते हैं।

10.7 सेवा क्षेत्र का हिस्सा घोषित ग्रीन फील्ड परियोजनाओं और विलयन तथा आधिप्राप्ति का II सबसे अधिक बना रहा। 2013 में, सेवा क्षेत्र में ग्रीन फील्ड परियोजनाओं में एफडीआई का मूल्य 20 प्रतिशत बढ़कर 385 बिलियन अमरीकी डालर हो गया जबकि ग्रीन फील्ड परियोजनाओं में एफडीआई के कुल मूल्य में 9 प्रतिशत की वृद्धि हुई। तथापि, सीमा-पार एमएंडए में सेवा क्षेत्र 2013 में 7 प्रतिशत गिरकर 155 बिलियन अमरीकी डालर रह गया जबकि एमएंडए में कुल एफडीआई मूल्य में 5 प्रतिशत की वृद्धि हुई।

भारत का सेवा क्षेत्र

10.8 भारत में सेवा क्षेत्र राष्ट्रीय और राज्यों की आय व्यापार प्रवाह, एफडीआई अंतर्वाह और रोजगार में योगदान के अर्थ में प्रमुख क्षेत्र के रूप में उभरकर सामने आ रहे हैं।

सेवाएं सकल घरेलू उत्पाद

10.9 2013-14 के दौरान, उपादान लागत पर (वर्तमान कीमतों पर) सकल घरेलू उत्पाद में 57 प्रतिशत हिस्सेदारी के साथ भारत की सकल घरेलू उत्पाद का एक बड़ा भाग सेवाओं में शामिल होता है। यह 2000-01 की तुलना में 6 प्रतिशत अधिक है। निर्माण सेवा को शामिल करते हुए इसकी हिस्सेदारी 64.8 प्रतिशत है। 2000-01 से 2013-14 की अवधि के दौरान सेवा क्षेत्र का सीएजीआर सकल घरेलू उत्पाद 8.5 प्रतिशत अधिक रहा है जबकि इसी अवधि के दौरान समग्र सकल घरेलू उत्पाद 7.1 प्रतिशत सीएजीआर अधिक रहा।

2000-01 से 2013-14 के दौरान समग्र स.घ.उ. के मुकाबले स.घ.उ. सेवा क्षेत्र की वृद्धि अधिक रही। इसमें गिरावट के बावजूद, 2013-14 में स.घ.उ. सेवाओं की वृद्धि समग्र स.घ.उ. में 4.7 प्रतिशत वृद्धि की तुलना में 6.8 प्रतिशत रहा।

10.10 2013-14 की अवधि के दौरान, सेवा क्षेत्र की वृद्धि दर 6.8 प्रतिशत रही जबकि 2012-13 में मामूली रूप से कमत्तर रही। यह व्यापार, होटलों और रेस्तराओं और परिवहन, भण्डारण और संचार के संयुक्त श्रेणी की वृद्धि दर में गिरावट के चलते रहा जो कि वित्तपोषण, बीमा, स्थावर-सम्पदा और व्यापार

सेवाओं में 12.9 प्रतिशत की जबर्दस्त वृद्धि के बावजूद 2012-13 के दौरान 5.1 प्रतिशत से गिरकर 3.0 प्रतिशत रह गई। निर्माण, सीमा रेखा सेवा समावेशन, जो 2012-13 से अच्छा निष्पादन नहीं कर रहा है, 2013-14 में केवल 1.6 प्रतिशत बढ़ा।

10.11 उप-क्षेत्रवार मुख्य सेवाएं बैंकिंग और बीमा (11.8 प्रतिशत) और स्थावर-सम्पदा, आवासों का स्वामित्व और कारोबारी सेवाएं (10.0 प्रतिशत) 2012-13 के दौरान वृद्धि दर के संदर्भ में बेहतर निष्पादनकर्ता रहे जबकि रेलवे (0.3 प्रतिशत) और होटल और रेस्तरां (0.5 प्रतिशत) का प्रदर्शन खराब रहा। (सारणी 10.2)

सारणी 10.2 : भारतीय सेवा क्षेत्र का हिस्सा और विकास (उपादान लागत पर)

	2000-01	2011-12@	2012-13*	2013-14**
व्यापार, होटल एवं रेस्तरां	**14.5 (5.2)**	**17.4 (1.2)**	**17.2 (4.5)**	**24.0 (3.0)#**
व्यापार	13.2 (5.0)	15.9 (1.0)	15.8 (4.8)	—
होटल एवं रेस्तरां	1.3 (7.0)	1.5 (3.8)	1.4 (0.5)	—
परिवहन, भंडारण और संचार	**7.6 (9.2)**	**7.3 (9.4)**	**7.5 (6.0)**	—
रेलवे	1.1 (4.1)	0.7 (7.5)	0.8 (0.3)	—
अन्य साधनों से परिवहन	5.0 (7.7)	5.4 (8.6)	5.6 (6.6)	—
भंडारण	0.1 (6.1)	0.1 (2.9)	0.1 (8.6)	—
संचार	1.5(25.0)	1.1 (11.2)	1.1 (6.5)	—
वित्तपोषण, बीमा, स्थावर संपदा और व्यापार सेवाएं	**14.1 (3.5)**	**16.5 (11.3)**	**17.2 (10.9)**	**18.5 (12.9)**
बैंकिंग एवं बीमा	**5.4 (-2.4)**	**5.7 (12.9)**	**5.9 (11.8)**	—
स्थावर संपदा, आवासीय एवं व्यापार सेवाओं का स्वामित्व	8.7 (7.5)	10.7 (9.9)	11.4 (10.0)	—
संचार, सामाजिक एवं निजी सेवाएं	**14.7 (4.6)**	**13.8 (4.9)**	**14.3 (5.3)**	**14.5 (5.6)**
लोक प्रशासन एवं रक्षा	6.5 (1.9)	5.9 (4.2)	6.0 (3.4)	—
अन्य सेवाएं	8.2 (7.0)	7.8 (5.4)	8.2 (6.8)	—
निर्माण	**6.0 (6.1)**	**8.2(10.8)**	**8.1 (1.1)**	**7.8 (1.6)**
कुल सेवाएं	**51.0 (5.1)**	**54.9 (6.6)**	**56.3 (7.0)**	**57.0 (6.8)**
कुल सेवाएं (निर्माण सहित)	**57.0 (5.2)**	**63.1 (7.1)**	**64.4 (6.2)**	**64.8 (6.2)**
कुल सकल घरेलू उत्पाद	**100.0 (4.1)**	**100.0 (6.7)**	**100.0 (4.5)**	**100.0 (4.7)**

स्रोत: केन्द्रीय सांख्यिकी कार्यालय

टिप्पणी: हिस्सा चालू कीमतों के संबंध में है और वृद्धि सतत् कीमतों के संबंध में है; कोष्ठक के आंकड़े वृद्धि दर्शाते हैं; * प्रथम संशोधित अनुमान, @ द्वितीय संशोधित अनुमान, ** अनंतिम अनुमान; # वर्ष 2013-14 के संबंध में व्यापार, होटल और रेस्तरां तथा परिवहन भण्डारण और संचार दोनों का हिस्सा शामिल है।

सेवाओं की राज्य-वार तुलना

10.12 2012-13 के दौरान, विभिन्न राज्यों और संघ-राज्य क्षेत्रों के सकल राज्य घरेलू उत्पाद में सेवाओं के हिस्से की राज्य-वार तुलना यह दर्शाती है कि सेवा क्षेत्र, भारत के अधिकांश राज्यों में अग्रणी क्षेत्र है। (चत्र 10.1)। चंडीगढ़, दिल्ली, केरल, मिजोरम, पश्चिम बंगाल, तमिलनाडु, महाराष्ट्र, नागालैंड, त्रिपुरा और कर्नाटक जैसे राज्य और संघ राज्य क्षेत्र का हिस्सा अखिल भारतीय हिस्से से अधिक है। चंडीगढ़ और दिल्ली का सूची में प्रथम स्थान है तथा इसका प्रत्येक हिस्सा 86.9 प्रतिशत है तथा इसके बाद 66.1 प्रतिशत के साथ मिजोरम का स्थान है। राज्यों/संघ राज्यों क्षेत्रों में सकल राज्य घरेलू उत्पाद में सेवाओं की हिस्सेदारी जिसके लिए आंकड़े उपलब्ध हैं, अरूणाचल प्रदेश की 29.9 प्रतिशत और सिक्किम की 30.6 प्रतिशत को छोड़कर 40 प्रतिशत से अधिक रही। 2012-13 के दौरान, बिहार की सबसे अधिक सेवा वृद्धि 17.2 प्रतिशत थी जिसके बाद 17.1 प्रतिशत पर गोवा का स्थान रहा। दूसरी ओर, अरूणाचल प्रदेश की 4.8 प्रतिशत सबसे कम सेवा वृद्धि रही जिसके बाद केरल का 5.5 प्रतिशत रही। पिछले पांच वर्षों के दौरान, गोवा और त्रिपुरा जैसे कुछेक राज्य सेवा क्षेत्र में लगातार द्विअंकीय वृद्धि दर्शाते रहे हैं। गोवा पर्यटन के क्षेत्र में और त्रिपुरा बैंकिंग और बीमा के विकास के क्षेत्र में अग्रणी रहा है।

चित्र 10.1 : 2012-13 में सेवा क्षेत्र का शेयर और वृद्धि

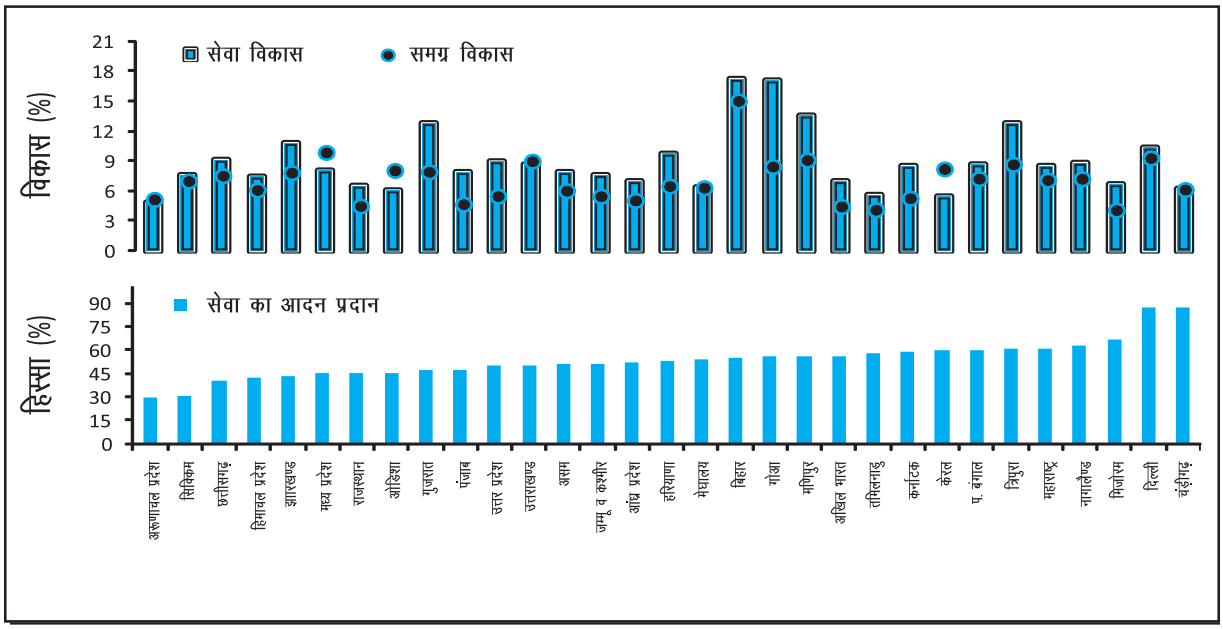

स्रोत: सीएसओ आंकड़ों से परिगणित।

टिप्पणी: हिस्सा वर्तमान कीमतों पर, वृद्धि दर स्थिर (2004-05) कीमतों पर।

भारतीय सेवा क्षेत्र में विदेशी प्रत्यक्ष निवेश

10.13 सेवा क्षेत्र का विकास, इस क्षेत्र में एफ॰डी॰आई॰ प्रवाह और सीमा पार फर्मों की भूमिका से सूक्ष्म रूप से जुड़ी है। एफडीआई के संबंध में सेवा क्षेत्र के अन्तर्गत विभिन्न क्रियाकलापों का वर्गीकरण करने में अनेकर्थता बनी रहती है तथापि, वित्तीय और गैर-वित्तीय सेवाओं, निर्माण विकास दूर-संचार, कम्प्यूटर हार्डवेयर तथा साफ्टवेयर तथा होटल एवं पर्यटन के सम्मिलित एफ॰डी॰आई॰ हिस्से के सेवाओं के एफ॰डी॰आई॰ हिस्से के मोटे अनुमान के रूप में लिया जा सकता है। यद्यपि इसमें कुछ गैर-सेवा घटक भी शामिल हो सकते हैं। अप्रैल 2000-नवम्बर, 2014 की अवधि के दौरान यह हिस्सा संचयी एफ॰डी॰आई॰ इक्विटी प्रवाह का 45% है। यदि निर्माण क्षेत्र में, सीमा रेखा समावेश शामिल नहीं की जाती है तो यह गिरकर 34 प्रतिशत हो जाएगी। पांच सेवा क्षेत्र भी ऐसे क्षेत्र हैं जो अर्थव्यवस्था में उच्चतम संचयी एफ॰डी॰आई॰ प्रवाह को प्रभावित कर रहे हैं तथा वित्तीय और गैर-वित्तीय सेवाएं अप्रैल 2000-मार्च, 2014 की अवधि के दौरान 39.5 बिलियन अमरीकी डालर के साथ सूची में सबसे ऊपर रहीं। इसके पश्चात दूसरे सेवा क्षेत्रों का स्थान है-निर्माण कार्य विकास (23.3 बिलियन अमरीकी डालर) दूर संचार (14.2 बिलियन अमरीकी डालर) तथा कम्प्यूटर साफ्टवेयर और हार्डवेयर (12.8 बिलियन अमरीकी डालर) यदि अन्य सेवाओं अथवा सेवा सम्बद्ध क्षेत्रों जैसे व्यापार (2.4 प्रतिशत) सूचना और प्रसारण (1.7%), परामर्शदात्री सेवाएं (1.1%) निर्माण (आधारभूत संरचना) क्रियाकलाप (1.2%), पत्तन (0.8%), कृषि सेवाएं (0.8%), अस्पताल और डायग्नोस्टिक केन्द्र (1.1%), शिक्षा (0.4%), हवाई भाड़े सहित हवाई परिवहन (0.2%) और थोक व्यापार (0.1%) का हिस्सा भी इसमें शामिल किया जाता है, तो सेवा क्षेत्र में संचयी एफ॰डी॰आई॰ प्रवाह (2000-01 से 2013-14) का कुल हिस्सा 54.7% हो जाएगा। वर्ष 2013-14 में, सेवा क्षेत्र में एफ॰डी॰आई॰ का अंतर्वाह (निर्माण सहित शीर्ष पांच क्षेत्र) तेजी से 37.6 प्रतिशत गिरकर 6.4 बिलियन अमरीकी डालर हो गया जबकि एफ॰डी॰आई॰ अंतर्वाह में समग्र वृद्धि 6.1 प्रतिशत थी। इसके परिणामस्वरूप, कुल एफ॰डी॰आई॰ में शीर्ष पांच सेवाओं की हिस्सेदारी गिरकर लगभग एक-छह हो गई (सारणी 10.3)

सारणी 10.3: उच्चतम एफ॰डी॰आई॰ अंतप्रर्वाह आकर्षित करने वाली सेवाएं

रैंक	क्षेत्र	मूल्य (मिलियन अमरीकी डालर में)				कुल में प्रतिशत	वृद्धि दर	
		2011-12	2012-13	2013-14	संचयी अंतप्रर्वाह (अप्रैल-2000-मार्च, 2014)		2012-13	2013-14
1	सेवा क्षेत्र (वित्तीय एवं गैर वित्तीय)	5216	4833	2225	39460	18	-7.3	-4.0
2	निर्माण कार्य संबंधी विकास #	3141	1332	1226	23306	11	-57.6	-8.0
3	दूरसंचार *	1997	304	1307	14163	7	-84.8	29.9
4	कम्प्यूटर सॉफ्टवेयर एवं हार्डवेयर	796	486	1126	12817	6	-38.9	31.7
5	होटल एवं पर्यटन	993	3259	486	7118	3	228.2	-85.1
	कुल शीर्ष पांच सेवाएं	**12143**	**10214**	**6370**	**96864**	**45**	**-15.9**	**-37.6**
	कुल एफ॰डी॰आई॰ अंतप्रर्वाह	**46556**	**34298**	**36396**	**217581**	**100**	**-26.3**	**6.1**

स्रोत: औद्योगिक नीति और संवर्धन विभाग (डीआईपीपी) के आंकड़ों पर आधारित।
टिप्पणी: # टाउनशिप, आवास निर्मित अवसंरचना और * रेडियो पेंजिंग, सेल्युलर मोबाइल, मूल टेलीफोन सेवाएं दर्शाते हैं।

भारत का सेवा निर्यात

10.14 विश्व सेवा के निर्यात में भारत के सेवा निर्यात का हिस्सा जो 1990 में 0.6 प्रतिशत से 2000 में 1.1 प्रतिशत और उसके बाद 2013 में 3.3 प्रतिशत तक बढ़ा। विश्व पण्य वस्तु निर्यात से इसके हिस्से में तेजी से वृद्धि हुई है। भारत के सेवा निर्यात की विकास दर 1996 से (2009 को छोड़कर) सभी वर्षों में विश्व की विकास दर से अधिक रही है। 2013 में इसमें उलटफेर हुआ है। (चित्र 10.2)

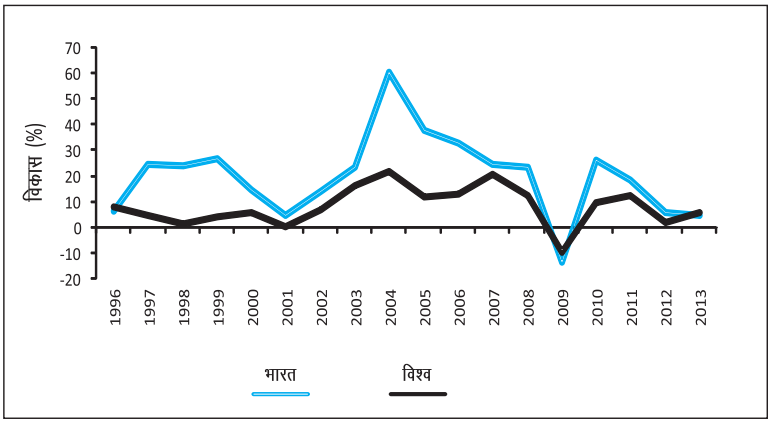

चित्र : 10.2 वाणिज्यिक सेवाओं की निर्यात वृद्धि: भारत और विश्व

स्रोत : 1 जून, 2014 को डब्ल्यूटीओ द्वारा बेस से परिगणित

10.15 जबकि सॉफ्टवेयर सेवाओं का निर्यात, जिनमें भारत की कुल सेवा निर्यात का 46 प्रतिशत है 2012-13 में 5.9 प्रतिशत से गिरकर 2013-14 में 5.4 प्रतिशत रह गया, यात्रा में लगभग 12 प्रतिशत की हिस्सेदारी है जो 0.4 प्रतिशत की नकारात्मक वृद्धि दर्शाती है। तथापि, वित्तीय सेवाओं के वैश्विक निर्यातों के साथ आगे बढ़ने पर भारत की वित्तीय सेवाओं के निर्यात में 2013-14 में 34.4 प्रतिशत की उच्च वृद्धि दर्ज की गई।

भारत में सेवा रोजगार

10.16 गत दो दशकों में रोजगार की क्षेत्रवार हिस्सेदारी की प्रवृत्ति में बदलाव आया है। चित्र 10.3) जिनमें कृषि का हिस्सा 1993-94 में 64.8 प्रतिशत से गिरकर 2011-12 में 48.9 प्रतिशत हो गया और उद्योग में 15.6 प्रतिशत से बढ़कर 24.3 प्रतिशत हो गया। इसी अवधि के दौरान रोजगार में सेवाक्षेत्र की हिस्सेदारी 19.7 प्रतिशत से बढ़कर 26.8 प्रतिशत हो गई।

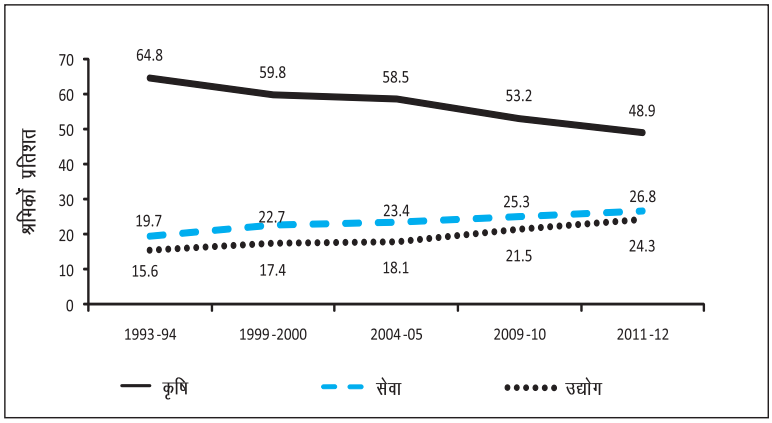

चित्र : 10.3 रोजगार की क्षेत्र-वार हिस्सेदारी यूपीएसएस

स्रोत: श्रम एवं नियोजन मंत्रालय के इनपुट पर आधारित जिसे विभिन्न दौरों से राष्ट्रीय प्रतिदर्श सर्वेक्षण कार्यालय (एनएसएसओ) प्रयोग करता है।

टिप्पणी: यूपीएसएस भूजल प्रिंसिपल सब्सिडियरी स्टेट्स

भारत की सेवा मुद्रास्फीति

10.17 थोक मूल्य सूचकांक जैसे सामान्य मुद्रास्फीति संकेतकों मे सेवा क्षेत्र में मुद्रास्फीति शामिल नहीं की जाती है और उपभोक्ता मूल्य सूचकांक (सीपीआई) में केवल आंशिक रूप से शामिल की जाती है जहां चिकित्सा देखभाल, शिक्षा, मनोरंजन और मनोविनोद परिवहन और संचार तथा आवास जैसे मदों को शामिल किया जाता है। फिलहाल भारत में सेवा आंकड़ों का संग्रहण मजबूत करने के कुछ प्रयास किए गए थे और सेवा मूल्य सूचकांकों (एसपीआई) को रेलवे, डाक, टेलीकाम और बैंकिंग क्षेत्रों के लिए प्रायोगिक आधार पर विकसित किए गए हैं। रेलवे सेवा मूल्य सूचकांक में केवल किराया भाड़ा और पैसेंजर सेवाएं शामिल हैं चूंकि आधार वर्ष में 68.4: 31.6 पर किराया भाड़ा और पैसेंजर अर्जनों के बीच अनुपात के साथ यातायात राजस्व अर्जनों का 99 प्रतिशत बनता है। बैंकिंग सेवा मूल्य सूचकांकों में प्रत्यक्ष सेवाएं जिसके लिए बैंक प्रभार शुल्क, कमीशन और ब्रोकरेज आदि हैं और मध्यवर्ती सेवाएं दोनों शामिल हैं। डाक सेवा मूल्य सूचकांक डाक विभाग के आंकड़ों पर आधारित हैं और जिसमें कोरियर सेवाएं शामिल नहीं हैं, उन्हें कम महत्वपूर्ण माना जाता है। दूरसंचार सेवा मूल्य सूचकांक को भारतीय दूरसंचार विनियमन प्राधिकरण (ट्राई) की निष्पादन संकेतक रिपोर्ट के आधार पर सेल्युलर सेवाओं के लिए विकसित किए गए हैं। यद्यपि ये सूचकांक प्रारंभिक चरण में हैं, वर्ष 2009-10 और 1010-11 से क्रमश: दूर संचार और बैंकिंग सेवाओं में मुद्रास्फीति में ये गिरावट दर्शाते हैं; 2011-12 से रेलवे सेवाओं के लिए मुद्रास्फीति

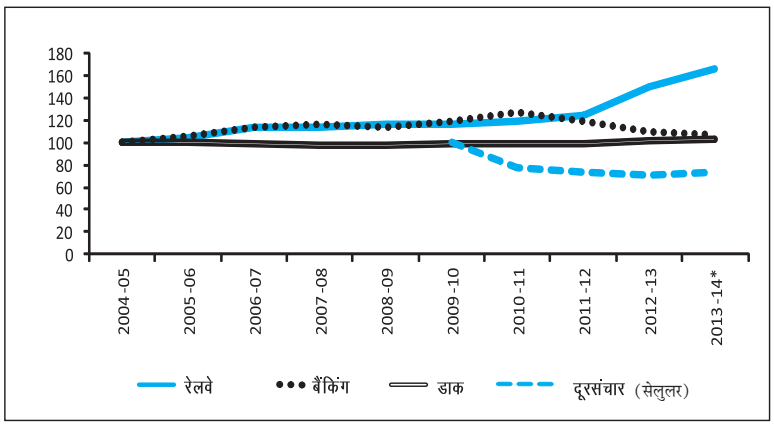

चित्र : 10.4 सेवा मूल्य सूचकांक (एसपीआई)

स्रोत: डीआईपीपी से इनपुट पर आधारित।

टिप्पणी: *अनंतिम 2013-14 हेतु: रेलवे के लिए आंकड़ा जनवरी 2014 तक है। डाक के लिए जून, 2013 तक के लिए है और दूरसंचार के लिए दिसम्बर, 2013 तक के लिए है।

में तेजी से वृद्धि हुई और 2008-09 से डाक सेवाओं के लिए मुद्रास्फीति बहुत मामूली थी। (चित्र 10.4)

प्रमुख सेवाएं: समग्र निष्पादन

10.18 वर्ष 2013-14 के दौरान भारत में विभिन्न सेवाओं के कुछ उपलब्ध संकेतक पर्यटन के बेहतर निष्पादन को दर्शाते हैं; 2012-13 में गिरावट के बाद दूरसंचार और विमानन में तेजी को दर्शाते हैं; और व्यापार और औद्योगिक क्रियाकलाप में मंदी के चलते नौवहन और रेलवे में खराब निष्पादन को दर्शाते हैं (सारणी 10.4)। भारतीय अर्थव्यवस्था निगरानी केंद्र (सीएमआईई) के अनुमान सीमित फर्म स्तरीय आंकड़े से लिए गए हैं, 2012-13 में परिवहन, संभार तंत्र, विमानन, होटल और दूरसंचार जैसे क्षेत्र में कम निष्पादन दर्शाते हैं। परिवहन संभार तंत्र और थोक व्यापार जैसे कुछेक क्षेत्र के 2013-14 में अच्छा प्रदर्शन किए जाने का अनुमान है। आगामी वर्षों में अधिकतर क्षेत्रों में बेहतर निष्पादन करने का अनुमान है। मार्किट एचएसबीसी की सेवा जीएमआई (परचेसिंग मैनेजर इंडेक्स) के अनुसार भारत की सेवा क्षेत्र ने नए व्यापार आदेशों में पुन: सुधार होने पर मई के दौरान लगभग एक वर्ष में पहली बार विस्तार किया है जिसमें 48.5 के अप्रैल के पठन से मई में 50.2 तक सूचकांक वृद्धि और 11 महीने में आउटपुट में पहली बार बढ़ोतरी को इंगित करता है। 50 से उपर का पठन दर्शाता है कि क्षेत्र में विस्तार हो रहा है जबकि 50 से नीचे का पठन दर्शाता है कि सेवा क्षेत्र घट रहा है।

10.4 भारत के सेवा क्षेत्र का प्रदर्शन: कुछ संकेतक

क्षेत्र	संकेतक	इकाई	अवधि				
			2009-10	2010-11	2011-12	2012-13	2013-14
उड्डयन	एयरलाइन यात्री (घरेलू एवं अंतर्राष्ट्रीय)*	मिलियन	77.4	88.9	99.6	97.7	103.3
दूरसंचार	दूरसंचार कनेक्शन (वायरलाइन और वायरलेस)[ख]	लाख	6212.8	8463.3	9513.5	8980.2	9330.2
पर्यटन	विदेशी पर्यटकों का आगमन[क]	मिलियन	5.17	5.78	6.31	6.58	6.97
	पर्यटकों के आगमन से विदेशी विनिमय की आय[क]	यूएस $ मिलियन	11136	14193	16564	17737	18133
नौवहन	भारतीय नौवहन का सकल टनभार[ख]	मिलियन जीटी	9.69	10.45	11.06	10.45	10.49
	जहाजों की संख्या[ख]	संख्या	1003	1071	1122	1158	1213
पत्तन	पत्तन यातायात	मिलियन टन	850.0	885.5	911.7	933.7	980.5
रेलवे	रेलवे द्वारा भाड़ा यातायात[ग]	मिलियन टन	887.8	921.7	969.1	1008.1	1050.2
	रेलवे का निवल टन कि.मी.[ग]	मिलियन	600548	625723	667607	691658	651869
भण्डारण	भण्डारण क्षमता	लाख एमटी	106.0	103.5	100.3	102.3	105.6
	भण्डारों की संख्या	संख्या	487	479	468	469	471

स्रोत: भारतीय दूरसंचार विनियामक प्राधिकरण, पर्यटन मंत्रालय, नौवहन मंत्रालय, रेल मंत्रालय,नागरिक उड्डयन महानिदेशालय और केन्द्रीय भण्डार निगम (भारतीय एग्जिम बैंक द्वारा संकलित)।

टिप्पणी: (क) कैलेन्डर वर्ष, उदाहरणार्थ 2009 के लिए 2009-10; (ख) आगामी वित्त वर्ष की 31 मार्च की स्थिति के अनुसार; (ग) 2009-10 से 2012-13 तक माल ढुलाई आधार पर जबकि 2013-14 के लिए माल लदान आधार पर है। * विदेशी एयरलाइनों में अंतर्राष्ट्रीय यात्री शामिल हैं; जीटी का अर्थ सकल टन; एमटी का अर्थ मीट्रिक टन।

प्रमुख सेवाएं: क्षेत्रवार निष्पादन

10.19 सकल घरेलू उत्पाद, रोजगार, निर्यात और भावी संभावनाओं के संदर्भ में उनके महत्व पर आधारित भारत की कुछेक प्रमुख वाणिज्यिक सेवाओं को इस भाग में विस्तार से पेश किया गया है। अन्य अध्यायों में शामिल कुछ प्रमुख सेवाओं की संभावित सीमा तक प्रतिलिपिकरण को रोकने के लिए ध्यान रखा गया है।

होटलों और रेस्त्राओं सहित पर्यटन

10.20 विश्व यात्रा एवं पयर्टन परिषद के अनुसार, वर्ष 2012 में विश्व यात्रा ने वैश्विक स.घ.उ. का 6.6 ट्रिलियन अमरीकी डॉलर और पर्यटन क्षेत्र ने वैश्विक

स.घ.उ. का 9 प्रतिशत का योगदान दिया और 260 मिलियन से अधिक रोजगारों का सृजन किया (विश्व के कुल रोजगार का 11 में 1)। संयुक्त राष्ट्र विश्व पर्यटन संगठन (यूएनडब्ल्यूटीओ) के आंकड़ों के अनुसार, विश्वव्यापी अंतरराष्ट्रीय पर्यटन आगमनों के साथ विश्व पर्यटन विकास की पुन: बहाली हुई है जो 2012 में 4.1 प्रतिशत से बढ़कर 2013 में 5.0 प्रतिशत हो गई।

10.21 विश्व यात्रा और पर्यटन परिषद के अनुमानों के अनुसार, भारत में पर्यटन क्षेत्र ने 2012 में भारत का स.घ.उ. का लगभग 6.6 प्रतिशत का योगदान दिया और 39.5 मिलियन नौकरियां दी गईं जो अपने कुल रोजगार का 7.7 प्रतिशत है। इस क्षेत्र में 2013 से 2023 तक 7.9 प्रतिशत का वार्षिक औसत दर पर विकास होने का अनुमान है। विश्व अंतर्गामी पर्यटन आगमनों में भारत की हिस्सेदारी सीएजीआर 6.9 प्रतिशत के साथ 1997 में 0.4 प्रतिशत से बढ़कर 2013 में 0.63 प्रतिशत हो गई जो कि इसी अवधि के दौरान विश्व के सीएजीआर 3.9 प्रतिशत के मुकाबले काफी अधिक रही। घरेलू पर्यटन के आकार ने भी अनुमानित 1.1 बिलियन सलाना यात्रा दौरों को पहले ही पार कर लिया है।

10.22 2008 के वैश्विक वित्तीय संकट के चलते 2009 में खराब निष्पादन के पश्चात्, भारत में विदेशी पर्यटक आगमनों (एफटीए) और डॉलर के संदर्भ में विदेशी मुद्रा अर्जनों (एफईई) में 2010 में पुन: तेजी से सुधार आया। तथापि, खासकर यूरोपीय संघ में मंदी के चलते विदेशी पर्यटक आगमनों (एफटीए) और विदेशी विनिमय अर्जनों (एफईई) में डालर के संदर्भ में गिरावट आई, हालांकि, 2013 में, विदेशी पर्यटक आगमनों में तेजी से वृद्धि हुई। यद्यपि, रुपए के संदर्भ में विदेशी मुद्रा अर्जन, विनिमय दर घट-बढ़ का प्रतिबिंब है। चिंता का विषय यह है कि डालर के संदर्भ में विदेशी मुद्रा अर्जन में अत्यधिक कमी आयी है जबकि विदेशी पर्यटक आगमनों में यह गिरावट अपेक्षाकृत कम रही है (सारणी 10.5)। यह उच्च व्ययी पर्यटकों के मुकाबले अपेक्षाकृत बैक-पैकर्स के उच्च अंतप्रर्वाह को दर्शाता है।

10.23 भारत ने अपने पर्यटन क्षेत्र की पूर्ण क्षमता का उपयोग नहीं किया है। पर्यटन प्रतिस्पर्धात्मक अध्ययन, विश्व आर्थिक मंच, 2013 ने भारत को 140 देशों में से नीचे 65वें स्थान पर रखा है। प्रतिस्पर्धा के अपने तीन स्तम्भों में, भारत को पर्यटन प्राकृतिक संसाधनों पर 21, कारोबारी माहौल को आरामदेह बनाने पर 67, किंतु पर्यटन और देशाटन के लिए अपने विनियामक फ्रेमवर्क पर सबसे खराब 110वां रैंक दिए गए हैं जोकि पर्यटन उद्योग के लिए प्रस्पिर्धात्मक लाभों में उनके तुलनात्मक प्राकृतिक और आर्थिक हितों को परिवर्तित करने की भारत की असमर्थता दर्शाता है।

भारत ने अपने पर्यटन क्षेत्र की पूर्ण क्षमता का उपयोग नहीं किया है और प्रतिस्पर्धात्मक लाभों में उनके तुलनात्मक प्राकृतिक और आर्थिक हितों को परिवर्तित करने में असमर्थ रहा।

	वृद्धि दर (प्रतिशत) वर्षा-नु-वर्ष				
संकेतक	2009	2010	2011	2012	2013
एफटीए (संख्या में)	-2.2	11.8	9.2	4.3	5.9
एफईई (अमेरीकी डॉलर में)	-5.9	27.5	16.7	7.1	2.2
एफईई (रुपए में)	4.7	20.8	19.6	21.8	12.0

स्रोत: पर्यटन मंत्रालय

सारणी 10.5 : भारत का पर्यटन निष्पादन

परिवहन से संबंधित कुछ सेवाएं

पोत परिवहन

10.24 किसी भी देश के वस्तु और सेवा दोनों व्यापार का एक महत्वपूर्ण संकेतक है। यह भारतीय अर्थव्यवस्था में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है जिसमें भारतीय व्यापार की कुल प्रमात्रा का लगभग 95 प्रतिशत तथा उसके मूल्य का 68 प्रतिशत समुद्री परिवहन द्वारा होता है। 31 मार्च, 2014 की स्थिति के अनुसार भारत के पास 10.49 मिलियन के सकल टन भार के साथ 1213 जहाजों का बेड़ा था तथा भारत के सरकारी क्षेत्र के भारतीय पोत परिवहन निगम का 31.30 प्रतिशत का सबसे बड़ा हिस्सा है। इनमें से 9.31 मिलियन सकल टन भार वाले 367 जहाज भारत के विदेशी व्यापार में लगे हैं जबकि बाकी तटीय व्यापार में लगे हैं। विकासशील देशों में भारत के पास सबसे बड़े व्यापारिक जलपोतों/बेड़ों के होने के बावजूद, 1 जनवरी, 2014 की स्थिति के अनुसार आईएसएल शिपिंग स्टेस्टिक्स एण्ड मार्किट रिव्यु के मुताबिक कुल विश्व डीडब्ल्यूटी का केवल 0.9 प्रतिशत हिस्सा होने के साथ पंजीकृत सबसे बड़े 'डेड वेट टनभार' में 35 पंजीकरण में भारत का स्थान 18वां है। 'फ्लैग ऑफ कन्वीनीयन्स' को छोड़ कर हांगकांग 8.6 प्रतिशत हिस्से के साथ सर्वाधिक डीडब्ल्यूटी वाला देश है जबकि चीन का हिस्सा 4.4 प्रतिशत है। यूएनसीटीएडी के अनुसार,

2012 में मालवाहक के 9.8 मिलियन बीस फुट के समकक्ष इकाई (टीईयू) के साथ माल वाहक जहाज प्रचालनों के संदर्भ में विकासशील देशों में भारत का स्थान 1.6 प्रतिशत विश्व शेयर के साथ आठवां था।

10.25 भारत विश्व में जहाज का खेमा उठाने वाले में से शीर्ष पर बना हुआ है। 2013 में 27.9 प्रतिशत (डीडब्ल्यूटी के संदर्भ में) के विश्व शेयर के साथ भारत ने आईएसएल शिपिंग सांख्यिकी तथा बाजार समीक्षा के अनुसार 12.46 मिलियन डीडब्ल्यूटी ने 341 जहाजों का खेमा बनाने वाले देशों की सूची में भारत शीर्ष पर है। भारत समुद्री यात्रियों की जरूरतों की पूर्ति करने वाले मुख्य देशों में से भी एक है। 2010 में 7.5 प्रतिशत शेयर के साथ भारत का तीसरा स्थान रहा, भारत ने वैश्विक नौवहन उद्योग को 46,497 अधिकारी दिए। यद्यपि पोत परिवहन क्षेत्र 2008 से ही आर्थिक संकटों से जुझता रहा है, वर्ष 2013 भारतीय पोत परिवहन कम्पनियों के लिए इससे भी अधिक चुनौती भरा रहा। इस दौरान पोत के सभी वर्गों में अत्यंत अल्प चार्टर किराए एवं माल दरों के कारण नकदी प्रवाह समस्याओं का सामना करना जारी रहा जैसाकि अन्तरराष्ट्रीय देशों में देखा गया। कम पोत परिवहन दौर से निकलते हुए नकदी प्रवाह समस्याओं को भारतीय अर्थव्यवस्था में कटौती द्वारा आगे संयोजित कर लिया गया। उच्च घरेलू ब्याज दरों के साथ नए जहाजों की खरीद कम हो गई। बाल्टिक ड्राई सूचकांक, माल व्यापार तथा पोत सेवाओं का बैरोमीटर जो कि 20 मई, 2008 को 11,793 की ऊंचाई पर था। 13 मई, 2014 को 982 पर नीचे पहुंच गया।

इसके मद्देनजर कि भारत के विदेशी कारोबार में भारतीय जहाजों का हिस्सा 1980 के दशक के अंत में 40 प्रतिशत से तेजी से गिरकर 2012-13 में 9.1 प्रतिशत हो गया और मौजूदा बेड़ा पुराना भी हो रहा है। भारत के जहाजी बेड़ा को बढ़ाए जाने की नितांत आवश्यकता है।

10.26 भारत के विदेशी व्यापार में वाहन में भारतीय जहाजों की संख्या में तेजी से कमी आयी है। 1980 के दशक के अंत में 40 प्रतिशत से यह भारत के कुल तेल आयात में 16.3 प्रतिशत हिस्से के साथ 2012-13 में गिरकर 9.1 प्रतिशत रह गई। नेशनल काउन्सिल ऑफ एप्लाइड रिसर्ज (एनसीएईआर) अध्ययन के अनुसार राष्ट्रीय पोत परिवहन टन भार में 5 प्रतिशत की बचत करता है अथवा माल भाड़े के बिल का अतिरिक्त 17 प्रतिशत अर्जित करता है। 2012-13 में लगभग 79.2 बिलियन अमरीकी डालर की कुल माल भाड़ा बिल के साथ तथा इस मद्देनजर कि भारत का आयात और निर्यात कार्गो का 90 प्रतिशत विदेशी पोत परिवहन कंपनियों द्वारा वहन किया जाता है, राष्ट्र के रूप में भारत को 71.3 बिलियन अमरीकी डालर के कुल माल भाड़ा बिल अदा किए जाने का अनुमान है जो कि निवल विदेश मुद्रा प्रवाह है।

10.27 31 मार्च, 2014 की स्थिति के अनुसार भारतीय जहाज की औसत आयु 1999 में 15 वर्ष से बढ़कर 18.1 वर्ष हो गई है (कुल जहाज का 43.85 प्रतिशत 20 वर्ष से अधिक आयु के है जबकि 16-20 आयु समूह में 10.66 प्रतिशत है) के साथ मौजूदा भारतीय जहाज पुराने हो रहे हैं। इस प्रकार भारत की पोत परिवहन बेड़े को बढ़ाए जाने की तत्काल आवश्यकता है ताकि यह कम से कम भारत की व्यापारिक प्रमात्राओं को ढोने में समर्थ हो सके।

पत्तन सेवाएं

10.28 पोत परिवहन सेवाओं के निष्पादन और व्यापारिक माल का पत्तनों की क्षमता के साथ घनिष्ठ संबंध है। 31 मार्च, 2014 की स्थिति के अनुसार, भारतीय पत्तनों की कुल क्षमता लगभग 1425 मिलियन टन हो गई है। 2013-14 के दौरान सभी पत्तनों पर हुआ कुल यातायात पिछले वर्ष के 5.02 प्रतिशत से बढ़कर 980.49 मिलियन टन रहा। प्रमुख पत्तनों का कार्गो थ्रुपुट 1.78 प्रतिशत रहा जबकि गैर-प्रमुख पत्तनों ने 9.57 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की।

10.29 भारत सरकार ने नीतिगत कदम उठाए हैं ताकि पत्तनों में निजी निवेश को बढ़ाया जा सके। बाजार स्थितियों पर आधारित टैरिफ को नियत करने के लिए सरकारी-निजी भागीदारी प्रचालकों को अधिक लचीलापन वाले नई टैरिफ दिशा-निर्देश

दिए गए हैं। पीपीपी निविदाकारों के लिए सुरक्षा अनापत्ति निदेशों को सरल बनाया गया है और पत्तन भूमि के पट्टे के लिए नई दिशा-निर्देश की घोषणा की गई है। 2013-14 के दौरान इन उपायों से पत्तन परियोजनाओं में लगभग 20,709.93 करोड़ रुपए का पर्याप्त निवेश हुआ। 2013-14 के दौरान तीन पत्तन-संबंधित निष्पादन संकेतकों में महत्वपूर्ण सुधार दिखाई दिया। औसत कारोबार समय 2012-13 में 2.58 दिवस से गिरकर 2013-14 में 2.25 दिवस रह गया। इसी प्रकार औसत पूर्व-लंगरगाह समय 2012-13 में 0.51 दिवस से गिरकर 2013-14 में 0.29 दिवस रह गया। 2013-14 में औसत आउटपुट प्रति जहाज लंगरगाह दिवस 6.13 प्रतिशत से सुधरकर 12,509 हो गया। टर्नअराउंड समय और पूर्व लंगरगाह समय में सुधार आरंभिक रूप से पत्तनों में यंत्रीकरण और व्यवस्थित सुधारों से हो सकता है और कुछ वैश्विक मंदी के चलते पत्तनों द्वारा आंशिक रूप से कम मात्रा में ढुलाई हुई। तथापि, 2013-14 में औसत आउटपुट प्रति जहाज लंगरगाह दिवस में सुधार यह दर्शाता है कि भारतीय पत्तनों के मानदण्डों में भी सुधार हो रहे हैं (सारणी 10.6)

सारणी 10.6 : भारतीय पत्तनों के कुछ निष्पादन संबंधी संकेतक

संकेतक	मूल्य						2012-13 की तुलना में 2013-14 में परिवर्तन
	1990-91	2000-01	2010-11	2011-12	2012-13	2013-14	
औसत अर्नअराउंड समय (दिवस)	8.10	4.24	5.29	4.44	2.58	2.25	-0.33
औसत पूर्व लंगरगाह समय (दिवस)	2.16	1.19	2.32	0.46	0.51	0.29	-0.22
औसत आउटपुल प्रति जहाज-लंगरगाह दिवस (टन में)	3372	6961	9140	13073	11786	12509	723.00

स्रोत: प्रमुख पत्तनों और भारतीय पत्तन संघ (आईपीए) आंकड़ों हेतु पोत परिवहन मंत्रालय के आंकड़े पर आधारित

भण्डारण सेवाएं

10.30 केन्द्रीय सांख्यिकी संगठन के अनुमानों के अनुसार, भण्डारण सेवाएं पिछले वर्ष के 2.9 प्रतिशत के मुकाबले 2012-13 में बढ़कर 8.6 प्रतिशत हो गई। भण्डारण सेवाएं अंतर्गामी और बहिर्गामी लॉजिस्टिक दोनों का अभिन्न अंग है चूंकि मांग/आदेश अंर्तप्रवाहों के मुताबिक परिवहन/रवानगी के पूर्व विभिन्न भौगोलिक स्थानों में तैयार मालों को एकत्र किया जाना होता है। भारत में, कृषिगत औजार और खाद्यान्न, तिलहन, दालें, कपास, उर्वरक और खाद्य जैसे उत्पाद के लिए भण्डारगारों का सबसे महत्वपूर्ण घटक, भण्डारण है। अन्य घटकों में औद्योगिक कच्चा माल और निर्मित्त वस्तुओं के लिए औद्योगिक भण्डारगार, अंतरदेशीय कंटेनर डिपो (आईसीडी)/कंटेनर फ्राइट स्टेशन (सीएफएस) जैसे आयात और निर्यात कारोबार को सहायता पहुंचाने के लिए अवसंरचना, समन्वित जांच पोस्ट के लिए कार्गो टर्मिनल (आईसीपी) और शीघ्र नष्ट होने वाली वस्तुओं के लिए विशेष भण्डारगाह (शीत और तापमान नियंत्रित भण्डारण) शामिल हैं।

10.31 केन्द्रीय भण्डागार निगम (सीडब्ल्यूसी) ने 2012-13 में 2.02 लाख मीट्रिक टन के मुकाबले 2013-14 में 3.21 लाख मीट्रिक टन अतिरिक्त भण्डारण क्षमता विकसित की है। राज्य स्तर पर, 17 राज्य भण्डारगाह निगम (एसडब्ल्यूसी) ने भण्डारण आवश्यकताओं की पूर्ति की और सीडब्ल्यूसी के काम को पूरा किया। 30 अप्रैल, 2014 की स्थिति के अनुसार, 268.3 लाख मिट्रिक टन की कुल भण्डारण क्षमता के साथ एसडब्ल्यूसी, 1687 भण्डागार के नेटवर्क का प्रचालन कर रहे थे।

10.32 सरकार द्वारा इस क्षेत्र में हाल ही में लिए गए प्रमुख नीतिगत पहलों में भारत सरकार के सात वर्ष/दस वर्ष गारंटी स्कीम के अंतर्गत गोदाम का निर्माण, इनमें से अधिकतर सीडब्ल्यूसी अथवा एसडब्ल्यूसी द्वारा चलाए जा रहे हैं, जिसमें भण्डागार संबंधी अवसंरचना के निर्माण में 100 प्रतिशत तक एफडीआई और राष्ट्रीय कृषि एवं

ग्रामीण विकास बैंक (नाबार्ड) और राष्ट्रीय कृषि विकास योजना के ग्रामीण भण्डारण योजना के तहत भण्डागारों का निर्माण शामिल है। 2007-08 में सरकार ने भण्डागार (विकास और विनियमन) अधिनियम 2007 को अधिनियमित किया है ताकि भण्डागार प्राप्ति को पूर्ण रूप से परक्राम्य बनाया जा सके। सरकार ने हाल ही में अपने निजी उद्यमी गारंटी (पीईजी) योजना के तहत देश में अतिरिक्त भण्डागार क्षमता के निर्माण के लिए अन्य महत्वपूर्ण कदम उठाये हैं। भण्डागार क्षेत्र को आगे बढ़ाने के लिए आयकर अधिनियम 1961 की धारा 35कघ के तहत कर लाभ भी उपलब्ध कराया जा रहा है जहां शीत श्रृंखला सुविधा की स्थापना और प्रचालन के लिए अथवा कृषिगत उत्पाद के भण्डागार संबंधी सुविधा के लिए पूंजी व्यय (भूमि की लागत को छोड़कर) का 15.0 प्रतिशत घटाने की निर्धारिती की अनुमति है।

कुछ कारोबारिक सेवाएं

10.33 मुख्य कारोबारिक सेवाओं में कम्प्यूटर संबंधित सेवाएं, अनुसंधान एवं विकास (आरएंडडी), लेखा सेवाएं तथा विधिक सेवाएं एवं मशीनरी को किराए पर देना आदि शामिल होती हैं। भारत के सकल घरेलू उत्पाद में 5.6 प्रतिशत शेयर के साथ गत्यात्मक कारोबारी सेवाएं 2012-13 में बढ़कर 14.1 प्रतिशत हो गई।

आईटी एवं सूचना प्रौद्योगिकी

10.34 सूचना प्रौद्योगिकी समर्थित सेवाएं (आईटी-आईटीईएस) उद्योग भारत का एक महत्वपूर्ण विकास उत्प्रेरक बन गया है। भारत वैश्विक स्रोतन में शीर्ष स्थान को बनाए रखा है जोकि 2012 में 52 प्रतिशत के मुकाबले 2013 में कुल वैश्विक स्रोतन बाजार (इंजिनियरिंग सेवाओ और अनुसंधान और विकास (आरएण्डडी) को छोड़कर) का 55 प्रतिशत से अधिक बनता है। आईटी-कारोबार प्रक्रिया प्रबंधन (बीपीएम) क्षेत्र (हार्डवेयर को छोड़कर) के 10.3 प्रतिशत तक बढ़ने का अनुमान है जो कि 2013-14 में 105 बिलियन अमरीकी डालर पर पहुंच गया। इस निर्यात में से, 81.9 प्रतिशत शेयर बढ़कर 13.0 प्रतिशत हो गया जबकि घरेलू राजस्व डॉलर में गिरकर 1.0 प्रतिशत हो गया। घरेलू राजस्व रुपए में 9.63 प्रतिशत बढ़ जाने का अनुमान है। 2014-15 में निर्यात और घरेलू राजस्व दोनों में उच्च वृद्धि होने का अनुमान है **(सारणी 10.7)**

10.35 उपभोक्ता के विश्वास में क्रमिक पुनरुद्धार विवेकसम्मत व्यय की ओर ले जाता है और यूएस और यूरोप से बढ़ती मांग चालान निर्यात में मदद कर रही है। भारत लागत प्रतिस्पर्धात्मकता में शीर्ष पर है। मूल प्रवेश स्तरीय वेतन, समनता कर्मचारी पिरामिड और तेज कैरियर वृद्धि स्रोत स्थानों से सात-आठ गुना सस्ता और अगले निकटम कम लागत देश से 30 प्रतिशत सस्ते में रहने हेतु भारत की सहायता कर रहे हैं। तथापि, संरक्षणवाद की चुनौतियां, वर्द्धित प्रतिस्पर्धा, मुद्रा

सारणी 10.7 : आईटी-बीपीएम क्षेत्र का समग्र वृद्धि निष्पादन

	मूल्य (बिलियन अमरीकी डालर में)					वृद्धि दर (प्रतिशत)		
	2008-09	2010-11	2012-13	2013-14अनु.	2014-15प्रा.	2012-13	2013-14अनु.	2014-15प्रा.
आईटी-बीपीएम सेवाएं	**59.9**	**76.3**	**95.2**	**105.0**	**118-123**	**8.6**	**10.3**	**12**
राजस्व								
निर्यात	47.1	59.0	76.1	86.0	97-100	10.6	13.0	13-15
घरेलू	12.8	17.3	19.2	19.0	21-23	1.1	-1.0	9-12
नियोजन (मिलियन में)	**2.2**	**2.5**	**3.0**	**3.1**	—	**6.9**	**5.6**	—

स्रोत: नास्कॉम

टिप्पणी: अनु.— अनुमान, प्रा.— प्राक्कलन (राजस्व में हार्डवेयर सेवाएं शामिल नहीं है)।

उत्तार-चढ़ाव, मजदूरी संबंधी मुद्रास्फीति और उपभोक्ता के विश्वास में असंगत स्तरों का समाधान किया जाना है।

10.36 यह क्षेत्र आईटी सेवाओं और कारोबार प्रक्रिया बाह्य स्रोतन (बीपीओ)/आईटीईएस में प्रत्यक्ष नियोजन के साथ एक बड़ा नियोजन सर्जक भी है जिसमें 5.6 प्रतिशत तक वृद्धि होने का अनुमान है। 2013-14 के दौरान 166,000 से अधिक नौकरियों के साथ 3.1 मिलियन हो गया जोकि वर्ष के दौरान बढ़ाई जा रही हैं (जिसमें 30 प्रतिशत महिलाओं के लिए) अप्रत्यक्ष रोजगार सृजन 10.0 मिलियन होने का अनुमान है। राष्ट्रीय सूचना प्रौद्योगिकी नीति (एनपीआईटी) आईटी और आईटीईएस उद्योग के राजस्व का ध्यान रखती है जिसमें 2011-12 में 100 बिलियन अमरीकी डालर से बढ़कर 2020 तक 300 बिलियन अमरीकी डालर हो जाएगी और निर्यात 2011-12 में 69 बिलियन अमरीकी डालर से बढ़कर 2020 तक 200 बिलियन अमरीकी डालर हो जाएगा।

अनुसंधान एवं विकास संबंधी सेवाएं

10.37 कारोबार सेवाओं में अनुसंधान एवं विकास (आरएण्डडी) का स्थान भारत की सकल घरेलू उत्पाद में दूसरा है। पिछले कुछ वर्षों से इसकी वृद्धि लगातार 20 प्रतिशत के करीब रही है; 2012-13 में इसकी वृद्धि 20.8 प्रतिशत रही है। बैटेल और आरएण्डडी पत्रिका द्वारा अनुमानित 2014 की आरएण्डडी (सीईआरडी) पर वैश्विक सकल व्यय 1.6 ट्रिलियन अमरीकी डालर था जो कि गत वर्ष के मुकाबले 50 बिलियन अमरीकी डालर से अधिक रही। पीपीपी (क्रय शक्ति समानता) के संबंध में सीईआरडी में भारत का हिस्सा 3 प्रतिशत है जिसका अनुमान 44 बिलियन अमरीकी डालर है जो कि चीन से पांच गुना कम है।

10.38 वैश्विक प्रतिस्पर्धात्मक रिपोर्ट 2013-14 के अनुसार, भारत की नवाचार क्षमता रूस को छोड़कर अन्य ब्रिक्स देशों (ब्राजील, रूस, भारत, चीन और दक्षिण अफ्रीका) से कमत्तर रहा है (सारणी 10.8) हांलांकि, भारत वैज्ञानिक अनुसंधान संस्थाओं को गुणवत्ता में चीन, ब्राजील और रूस से बेहतर अंक प्राप्त है, परन्तु इन संस्थाओं में किए गए अनुसंधान वाणिज्यिक उपयोग के लिए प्रयोग में नहीं लाए जा रहे हैं। चीन और दक्षिण अफ्रीका जैसे कुछ अन्य ब्रिक्स की तुलना में अनुसंधान और विकास (आरएण्डडी) पर विश्वविद्यालय उद्योग सहयोग पर इसके कम स्कोर से प्रदर्शित होता है। हालांकि भारत वैज्ञानिकों और अभियन्ताओं की उपलब्धता में सभी ब्रिक्स देशों से बेहत्तर अंक अर्जक है फिर भी बड़ी अवसंरचना के चलते इसके पास प्रति मिलियन लोगों पर वैज्ञानिकों और अभियन्ताओं का

सारणी 10.8 : वैश्विक प्रतिस्पर्धात्मक सूचकांक: अनुसंधान और विकास नवोन्मेष

देश	नवोत्पाद हेतु क्षमता		वैज्ञानिक अनुसंधान संस्थानों की गुणवत्ता		अनु. और विकास पर कंपनी के खर्चे		अनु. और विकास पर विश्वविद्यालय उद्योग सहयोग		वैज्ञानिकों और इंजीनियरों की उपलब्धता		प्रदत्त पीसीटी पेटेंट/मिलियन जनसंख्या	
	स्कोर	रैंक	स्कोर	रैंक	स्कोर	रैंक	स्कोर	रैंक	स्कोर	रैंक	स्कोर	रैंक
भारत	4.0	41	4.5	37	3.6	39	4.0	47	5.0	15	1.4	64
चीन	4.2	30	4.3	41	4.2	22	4.4	33	4.5	44	9.2	36
दक्षिण अफ्रीका	4.1	33	4.8	35	3.5	43	4.5	29	3.5	108	6.2	42
ब्राजील	4.0	36	4.3	42	3.6	37	4.0	49	3.4	112	2.9	51
रूस	3.5	64	3.7	65	3.1	69	3.6	64	3.8	90	6.1	43
दक्षिण कोरिया	4.5	22	4.9	24	4.6	20	4.7	26	4.6	33	183.4	9
यूके	5.2	8	6.2	3	4.7	12	5.6	5	4.8	23	90.6	18
यूएसए	5.6	5	6.0	5	5.4	5	5.7	3	5.3	6	141.1	12

स्रोत: वैश्विक प्रतिस्पर्धात्मक रिपोर्ट 2013-14, विश्व अर्थिक मंच।

टिप्पणी: पीसीटी-पेटेंट सहयोग संधि।

अनुपात कम है। इस कमी का कारण गुणवत्ता पूर्ण उच्च शिक्षा संस्थानों की कमी है। अत्यधिक बडी जनसंख्या आधार होते हुए भी, भारत में 2025 तक इंजिनियरों की 25% कमी होने की संभावना है। पेटेंट प्रदत्त प्रति मिलियन जनसंख्या के आधार पर, अल्प ब्रिक्स देशों के मुकाबले भारत बुरी दशा में आ गया है। आरएण्डडी पर कंपनी व्यय के संबंध में चीन से भी काफी नीचे है।

रूस को छोड़कर अन्य ब्रिक्स देशों की तुलना में नवोन्मेष हेतु भारत की क्षमता कम रही है।

विधिक सेवाएं

10.39 वर्ष 2005-06 से 2012-13 तक प्रत्येक वर्ष विधिक सेवाएं 8.3% की दर से बढ़ रही हैं। वैश्विक प्रतिस्पर्धात्मक रिपोर्ट 2013-14 के अनुसार, भारत न्यायिक स्वतंत्रता के मुताबिक 4.7 स्कोर के साथ भारत का 40वां स्थान है जिसमें 2012-13 में 45वां स्थान की तुलना में काफी सुधार हुआ है। जहां तक विवादों के निपटान में विधिक ढांचे की दक्षता का संबंध है भारत पिछले वर्ष की 59वी स्थान की तुलना में 3 स्थान गिरा, 3.8 के स्कोर के साथ भारत का स्थान 62वां रहा। चुनौतीपूर्ण विनियमनों में विधिक ढांचे की दक्षता के संबंध में पिछले वर्ष के मुकाबले 52वां रैंक से सुधरकर 3.8 के स्कोर के साथ भारत का स्थान 48वां रहा।

10.40 विधिक सेवा प्राधिकरण अधिनियम 1987 के तहत राष्ट्रीय विधिक सेवा प्राधिकरण (नालसा) का गठन विधिक सहायक कार्यक्रमों के क्रियान्वयन की निगरानी करने व इनका मूल्यांकन करने के लिए और इस अधिनियम के तहत विधिक सेवाएं उपलब्ध कराने के उद्देश्य से नीतियां और सिद्धांतों को तय करने के लिए किया गया है। कानून के तहत अपने अधिकारों और समाधानों के बारे में अनभिज्ञ लोगों द्वारा सामना की जा रही समस्याओं के साथ देश में कानून पढ़ने वाले विद्यार्थियों को परिचित कराने के लिए यूनिवर्सिटियों, विधि कोलेजों में विधि क सेवा क्लिनिक और अन्य संस्थाओं में स्कीमें 2013 में शुरू की गईं। 2013-2014 के दौरान देश में विधिक सहायता सेवाओं के माध्यम से 22.23 लाख से अधिक व्यक्ति लाभान्वित हुए हैं। इनमें से 29,000 व्यक्तियों से अधिक अनुसूचित जाति से 24,844 अनुसूचित जनजातियों से संबंध रखते हैं। 58,883 से अधिक महिलाएं और 8,134 बच्चे लाभान्वित हुए हैं। इस अवधि के दौरान 1,13,838 से अधिक लोक अदालतें गठित की गई जिसमें 1.17 लाख मोटर दुर्घटना दावे मामले सहित 90.14 लाख से अधिक मामलों को निपटाया गया।

स्थावर संपदा सेवाएं एवं आवास

10.41 स्थावर संपदा एवं आवासों का भारत के सकल घरेलू उत्पाद में 5.9 प्रतिशत हिस्सा है तथा इसमें 2012-13 में 5.6 प्रतिशत की वृद्धि हुई। स्थावर संपदा 26.1 प्रतिशत बढ़ा। आवास क्रियाकलापों का अग्रगामी एवं पश्चगामी दोनों प्रकार का संबंध है जो कि न केवल पूंजी निर्माण, रोजगार के सृजन और आय के अवसरों में योगदान करते हैं बल्कि आर्थिक वृद्धि में भी योगदान करते हैं। अनुमान दर्शाते हैं कि आवास और निर्माण में निवेशित प्रत्येक रुपया सकल घरेलू उत्पाद में 78 पैसे जोड़ता है।

10.42 भारत के पूरे शहरों में आवासीय कीमतों के राष्ट्रीय आवास बैंक के सूचकांक के अनुसार, रिहायशी आवास कीमतों में कई शहरों और नगरों में वर्षों से महंगाई रही। 2007 (आधार वर्ष) की तुलना में 2007-13 की अवधि के दौरान आवासीय संपत्ति की कीमतें चेन्नई में (230 प्रतिशत) की अधिकतम वृद्धि के साथ 24 शहरों में वृद्धि देखी गई जिसके बाद पूणे (135 प्रतिशत), भोपाल (123 प्रतिशत) और मुम्बई (122 प्रतिशत) आता है। केवल दो शहरों में अधि कतम गिरावट के साथ कीमतों में गिरावट देखी गई जिसमें कोची (-15 प्रतिशत) तथा हैदराबाद में (-7 प्रतिशत) रहा। 2013 के दौरान 20 शहरों में से 13 शहरों में 2012 की तुलना में कीमतों में वृद्धि देखी गई। जयपुर में (21प्रतिशत)

अधिकतम वृद्धि देखी गई जिसके बाद भुवनेश्वर (17 प्रतिशत) का स्थान आता है, पिछले वर्ष की तुलना में 7 शहरों में कीमतों में वृद्धि देखी गई। लुधियाना में (-16 प्रतिशत) अधिकतम गिरावट रही जबकि विजयवाड़ा में (-13 प्रतिशत) गिरावट देखी गई।

10.43 भारत की प्रमुख नीतिगत समस्या आवास ईकाइयों और अपर्याप्त आवास वित्त समाधानों की मांग और आपूर्ति के बीच अंतर का होना है। देश की जनसंख्या का लगभग 30 प्रतिशत शहरों तथा नगर क्षेत्रों में निवास करता है और यह आंकड़ा 2030 में 50 प्रतिशत तक पहुंचने का अनुमान है। वर्तमान नगर आवास की कमी 18.78 मिलियन है जिसमें से 95.6 प्रतिशत आर्थिक रूप से कमजोर वर्गों/कम आय समूह (एलआईजी) घटकों से है और बड़े वित्तीय निवेश की आवश्यकता पड़ती है। कम लागत वाले आवासों को बढ़ावा देने के लिए कम लागत वाले आवास परियोजनाओं हेतु विदेशी वाणिज्यिक उधार (ईसीबी) को अनुमति प्रदान करने जैसे नई सुविधाएं/कदम उठाए जा रहे हैं। केंद्रीय बजट 2013-14 में, पंचवर्षीय योजना 2013-14 में पहला मकान के लिए 25 लाख रु॰ तक का आवास ऋण, रु॰ 100.000 तक का ब्याज का अतिरिक्त कटौती मूल्यांकन वर्ष 2014-15 में दिए गए हैं। रु॰ 2000 करोड़ की निधि के साथ शहरी आवास निधि की भी घोषणा की गई है। तदनुसार, राष्ट्रीय आवास बैंक (एनएचबी) ने शहरी आवास क्षेत्र में निधि वितरित करने के लिए एक पुनर्वित्त स्कीम तैयार किया है। यह स्कीम संसाधनों को बढ़ाना है और शहरी क्षेत्रों में रह रहे कम आय वर्गों में लोगों की आवासीय आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए ऋण उपलब्धता में सुधार करना है। 31 मार्च, 2014 तक एनएचबी ने विभिन्न प्राथमिक ऋण संस्थानों (पीएलआईएस) को इस योजना के तहत रु॰ 441.15 करोड़ संवितरित किया है। शहरी गरीब के आवास हेतु ब्याज सहायता योजना के क्रियान्वयन की प्रायोगिक चरण के दौरान सामना किए जा रही बाधाओं से निजात पाने के लिए सरकार ने शहरी क्षेत्रों में ईडब्ल्यूएस/एलआईजी की आवासीय आवश्यकतओं के समाधान के लिए एक अतिरिक्त लिखत के रूप में संशोधित ब्याज सहायता योजना तैयार किया है जिसे राजीव ऋण योजना (आरआरवाई) नाम दिया गया है। राजीव ऋण योजना के अंतर्गत ऋण की राशि ईडब्ल्यूएस के लिए रु॰ 5.0 लाख और एलआईजी लाभार्थियों के लिए रु॰ 8.0 लाख तक बढ़ाई गयी है जो कि दोनों वर्गों के लिए रु॰ 5.0 लाख तक का ब्याज सहायता दी गई है।

10.44 आवास संबंधी निवेश के लिए संस्थागत ऋण एक महत्वपूर्ण कारक है। यद्यपि सकल घरेलू उत्पाद के रूप में बंधकों के साथ लगभग 18-20 प्रतिशत सालाना का सीएजीआर पर बढ़ रहा है। यह वृद्धि 2001 में 3.4 प्रतिशत से बढ़कर 2012-13 में 9 प्रतिशत हो गई, चीन, थाईलैंड और मलेशिया जैसे देश से नीचे हैं। प्रक्रियाओं में विलंब इस क्षेत्र की अन्य प्रमुख बाधा है। वर्ल्ड बैंक डुईंग बिजनेस 2014 के अनुसार निर्माण परमिट देने के संबंध में भारत का 182वां स्थान है जिसमें दक्षिण एशिया में 16 के औसत की तुलना में परमिट देने के लिए कुल 35 प्रक्रियाओं की आवश्यकता पड़ती है जबकि ओईसीडी (आर्थिक सहयोग एवं विकास संगठन) देशों में 13 की आवश्यकता पड़ती है इन समस्याओं का समाधान करने की आवश्यकता है ताकि आवास को न केवल सस्ता बनाया जा सके बल्कि खरीदने में भी आसानी हो।

व्यापार

10.45 व्यापार क्षेत्र में सभी वस्तुओं में थोक और खुदरा व्यापार शामिल है, चाहे घरेलू रूप से उत्पादित हो, आयातित अथवा निर्यातित हो। इसमें क्रय और विक्रय अभिकर्त्ताओं, दलालों और नीलामीकर्त्ताओं को शामिल किया जाता है। सकल घरेलू उत्पाद में 15.8 प्रतिशत के शेयर के साथ रु॰ 14,79,787 करोड़ व्यापार क्षेत्र

2012-13 में बढ़कर 4.8 प्रतिशत हो गया। अन्तरराष्ट्रीय आर्थिक संबंधी अन्तरराष्ट्रीय अनुसंधान परिषद (आईसीआरआईईआर) द्वारा अध्ययन 2008 में 35.1 मिलियन के खुदरा व्यापार में नियोजन का अनुमान लगाया, जिसमें देश के कार्यबल का 7.3 प्रतिशत सम्मिलित है। बड़ी संख्या में बड़े और विकेंद्रीकृत व्यापारी भारतीय खुदरा व्यापार पर प्रभुत्व रखते हैं। एक अनुमान के मुताबिक इनकी संख्या 1.3 करोड़ है।

10.46 एटी कियरनी ग्लोबल रिटेल डेवलपमेंट इंडेक्स (जीआरडीआई) के अनुसार 2012 में भारत 5वां स्थान से 2013 में 14वीं रैंक पर फिसल गया। इसकी पूर्व रैंकिंग 2002 में शुरूआती सूचकांक में 6वां थी और फिलहाल 2009 में प्रथम स्थान पर रहा। समग्र खुदरा व्यापार में 2012 में दूकान बिक्री प्रमात्रा वृद्धि धीमी रही खासकर जीवन शैली और मूल्य-आधारित प्रकारों में उच्च प्रचालन कीमतें, विक्रेताओं के साथ कम सौदा-शक्ति, बिक्री में सुधार के लिए भारी छूट ने लाभ और विस्तार योजनाओं को प्रभावित किया है। वास्तविक स्थावर लागत और स्थान की उपलब्धता भी प्रमुख मुद्दे रहे। नई निवेशकर्त्ता बिक्री उत्पादकता में सुधार करने, कटौती प्रचालन कीमतें और स्टोर का आकार कम करने के लिए सक्रिय रूप से आस लगा रहे हैं। तथापि, दीर्घावधिक वस्तुएं मजबूत रहे खासकर बड़े नवयुवक और बढ़ते ब्रांड और फैशन प्रिय जनसंख्या से 2015 तक 14 से 15 प्रतिशत प्रतिवर्ष की खुदरा वृद्धि होने की संभावना है।

10.47 2012 में, सरकार ने पहली बार एकल ब्रांड खुदरा व्यापार में 100 प्रतिशत एफडीआई की अनुमति दी है। भारत में कई एकल-ब्रांड खुदरा विक्रेता बड़े क्षेत्रों में प्रवेश किए हैं। कपड़ा और सौंदर्य प्रसाधन (अर्थात् बुक्स, ब्रदर्स, केनेथ, कोले, सिफोरा और अरमानी जूनियर) स्टैंड एलोन बूटिक (अर्थात् रोबर्रो, कावाली और क्रिश्चियन लूबोटिन) और खाद्य (अर्थात् स्टारबकस और छुदकिन दोनट्स)। मल्टी-ब्रांड रिटेल में, सरकार ने 51 प्रतिशत एफडीआई की अनुमति दी है जो कि निवेश, सोर्सिंग, स्टोर का स्थान, और राज्य सरकार के अनुमोदन के पूर्व शर्तों के साथ 2013 के पहले शुरूआत हो चुकी है। कुल खुदरा बिक्री का 1 प्रतिशत से कम ई-कामर्स बिक्री के साथ ऑनलाइन शोपिंग प्रथम चरण पर है। परन्तु वृद्धि तभी उम्मीद की जा सकती है जब ज्यादा लोग इंटरनेट से जुड़ सकें। मोबाइल फोन, इलैक्ट्रॉनिक उपकरण, कपड़ा, सिनेमा, वादन और किताबें सबसे तेज बढ़ते श्रेणियों में हैं।

10.48 देश में थोक और खुदरा व्यापार दोनों नई नियंत्रणों, बहु संगठनों और अनेक आदेशों द्वारा शासित होते हैं। इसने असंगठित बाजार पर प्रभाव डाला है जो कि अर्थव्यवस्था में वस्तुओं के मुक्त प्रवाह, उच्च परिवहन लागत और सामान्यतया निम्न दक्षता और उत्पादकता स्तर पर बाधा उत्पन्न करते हैं। साझा राष्ट्रीय बाजार के निर्माण के लिए वस्तुओ और सेवाओं का स्वच्छन्द प्रवाह एक अनिवार्य पूर्वापेक्षा है जो पूरे क्षेत्र में विकास और व्यापार को बढ़ावा देगा और आर्थिक दक्षता में विशेषीकरण और उच्च स्तरीय आर्थिक क्षमता प्रदान करेगा।

मीडिया और मनोरंजन सेवाएं

10.49 भारतीय मीडिया मनोरंजन उद्योग में विभिन्न खण्ड हैं जिनमें टेलीविजन, प्रिंट, फिल्में, रेडियो, संगीत, एनीमेंशन, गेमिंग और विजुअल इफेक्ट्स तथा डिजिटल एडवर्टाइजिंग शामिल हैं। पिछले दो दशकों में इस उद्योग में अभूतपूर्व वृद्धि देखी गई है जिसके चलते यह उद्योग भारत में सबसे तेजी से बढ़ते उद्योगों की श्रेणी में शामिल हो गया है। फिक्की-केपीएमजी द्वारा प्रकाशित एक रिपोर्ट के अनुसार, भारतीय मीडिया मनोरंजन उद्योग में 2012 के ₹ 821 बिलियन के स्तर में

11.8 प्रतिशत की वृद्धि हुई और यह 2013 में ₹ 918 बिलियन तक जा पहुंचा। इस उद्योग के 14.2 प्रतिशत के सीएजीआर पर बढ़ने और 2018 तक ₹1786 बिलियन तक हो जाने की संभावना है। डिजिटल एडवर्टाइजिंग और गेमिंग, जिनमें वर्ष 2013 में क्रमशः 38.7 प्रतिशत और 25.5 प्रतिशत की दर पर वृद्धि हुई, आगामी वर्षों में उनके द्वारा इस क्षेत्र की वृद्धि संचालित किए जाने की संभावना है।

10.50 भारत का प्रसारण उद्योग विश्व के सबसे बड़े प्रसारण उद्योगों में से एक है जहां लगभग 161 मिलियन टीवी परिवार हैं। भारत में लगभग 800 सेटेलाइट टेलीविजन चैनल, 88 टेलिपोर्ट, 245 रेडियो चैनल और 170 सामुदायिक रेडियो स्टेशन काम कर रहे हैं। भारत सरकार ने अपने केबल नेटवर्क को चार चरणों में डिजिटाइज करने की एक महत्वकांक्षी कवायद शुरू की है जिससे 31 दिसम्बर, 2014 तक एनालॉग टीवी सेवाएं पूरी तरह समाप्त हो जाएंगी। केबल डिजिटाइजेशन के पहले दो चरण सफलतापूर्वक पूर्ण हो चुके हैं। चरण I में, जो 31 अक्तूबर, 2012 को पूर्ण हुआ, चार महानगरों में से तीन दिल्ली, मुम्बई और कोलकाता ने पूर्ण डिजिटाइजेशन हासिल कर लिया है। रुके हुए अदालती मामलों के चलते चेन्नई अभी इस स्थिति को हासिल नहीं कर पर पाया है। चरण II 14 राज्यों और एक संघ राज्य क्षेत्र में स्थित 36 शहरों में (10 लाख से अधिक की आबादी वाले) 31 मार्च, 2013 को समाप्त हुआ। पहले दो चरणों में तीन करोड़ सेट टॉप बाक्स (एसटीबी) संस्थापित किए गए। यह अनुमान है कि राज्य सरकारें और भारत सरकार इससे बहुत लाभान्वित होंगी क्योंकि डिजिटाइजेशन के जरिए अभिदाता आधार में आई पारदर्शिता से कर-संग्रहण में कई गुणा वृद्धि होगी। राज्य सरकारों से प्राप्त आरम्भिक आंकड़ों से पता चलता है कि मनोरंजन कर-संग्रहण में पहले ही दो से तीन गुना वृद्धि हो चुकी है। इसमें एसटीबी के स्थानीय विनिर्माण के लिए भी अच्छे अवसर हैं जिससे रोजगार सृजन संभव हो पाएगा। अन्य शहरी क्षेत्रों को कवर करने वाला चरण III और शेष भारत को कवर करने वाला चरण IV क्रमशः 30 सितम्बर, 2014 और 31 दिसम्बर, 2014 को पूर्ण होना तय है। भारत में डाइरेक्ट टू होम सेवाएं भी तेजी से बढ़ रही हैं और फिक्की-केपीएमजी रिपोर्ट 2014 के अनुसार, यह लगभग एक मिलियन प्रतिवर्ष की दर पर बढ़ रही हैं। हिट्स (हैडएंड इन दि स्काई) भारत में शत्प्रतिशत डिजिटल वितरण का लक्ष्य हासिल करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा। इस समय भारत सरकार द्वारा दो हिट्स प्रचालकों को काम करने की अनुमति दी गई है।

10.51 डिजिटाइजेशन का प्रभाव फिल्म क्षेत्र में भी महसूस किया जा रहा है। भारत की सिनेमा स्क्रीनों का लगभग 95 प्रतिशत पहले ही डिजिटाइजेशन हो जाने के चलते यह उद्योग आगे चलकर बहुत सकारात्मक विकास के लिए तैयार है। पायरेसी आज भी फिल्म उद्योग के लिए एक चुनौती बनी हुई है भारत सरकार ने पायरेसी से निपटने के लिए एक कारगर कानूनी तंत्र बनाना और पीपीपी मोड में मल्टीमीडिया अभियान के जरिए सभी हितधारकों में जन जागरुकता पैदा करने के लिए एक पायरेसी रोधी योजना को अनुमोदित किया है। अब तक भारत सरकार ने नौ देशों नामतः यूके, इटली, ब्राजील, जर्मनी, फ्रांस, न्यूजीलैंड, पोलैण्ड, कनाडा और स्पेन के साथ सहनिर्माण करारों पर हस्ताक्षर किए हैं। भारत सरकार ने वित्त वर्ष 2013-14 में 31 विदेशी निर्माण घरानों को भारत में शूटिंग करने की अनुमति प्रदान की है। बहुआयामी भारतीय सिनेमा की समृद्ध विरासत को सुरक्षित रखने के लिए भारत सरकार की एक महत्वकांक्षी योजना-मुम्बई में अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर राष्ट्रीय भारतीय सिनेमा संग्रहालय (एनएमआईसी) का निर्माण-कार्यान्वयनाधीन है। पहले चरण का निर्माण पूरा हो चुका है और जल्द ही यह आम जनता के लिए खोल दिया जाएगा।

बॉक्स 10.1 : सेवा क्षेत्र सुधार : कुछ प्रमुख मुद्दे और उच्च लागत के क्षेत्र

सामान्य और क्षेत्र विशिष्ट कई मुद्दे, जिनमें घरेलू विनियमन भी शामिल हैं, सेवा क्षेत्र की विकास संभावनाओं में बाधा उत्पन्न करते हैं और जिन्हें यदि कुशलतापूर्वक सुलझाया जाए तो इस क्षेत्र की मदद हो सकती है और अर्थव्यवस्था के लिए भारी लाभ प्राप्त हो सकते हैं।

सामान्य मुद्दे:

नोडल एजेंसी और विपणन: सेवाओं के विभिन्न उप-क्षेत्रों में विकास की जबरदस्त संभावना के बावजूद, सेवाओं के लिए कोई एक नोडल विभाग या एजेंसी नहीं है। वाणिज्य विभाग के अंतर्गत सेवाओं के लिए एक अंत:मंत्रालयी समिति गठित की गई है। लेकिन सेवा संबंधित कार्यकलापों में व्यापार से परे कई दूसरे मुद्दे भी शामिल होते हैं और अवांछित विनियमों को समाप्त करने के लिए तथा समन्वित तरीके से सेवा क्षेत्र में उपलब्ध अवसरों से लाभ उठाने के लिए अधिक सकारात्मक दृष्टिकोण और उपयुक्त संस्थागत तंत्र की जरूरत है। सेवा निर्यातों के लिए संवर्धनकारी कार्यकलाप किए जाने की भी जरूरत है जैसे सेवाओं के लिए पोर्टल स्थापित करना, व्यापार प्रदर्शनियों में सॉफ्टवेयर-भिन्न सेवाओं में भी भारत की दक्षता प्रदर्शित करना और समर्पित ब्रांड एम्बेसेडरों और विशेषज्ञों की सेवाएं लेना।

विनिवेश: केन्द्र और राज्य सरकारों दोनों के ही अंतर्गत सेवा संबंधी सरकारी क्षेत्र के उपक्रमों में विनिवेश करने के लिए बड़ी गुंजाइश है। सेवा संबंधी सरकारी क्षेत्र के कुछ उपक्रमों में विनिवेश में तेजी लाने से न सिर्फ सरकार को राजस्व मिलेगा बल्कि इन सेवाओं के विकास में भी तेजी आएगी।

ऋण संबधी: यहां शामिल मुद्दों में इस क्षेत्र की नकदी संबंधी जरूरतों को पूरा करने के लिए ''संपार्श्विक मुक्त'' उदार ऋण दिया जाता और ऋण योग्य सेवा फर्मों के लिए संपार्श्विक के तौर पर निर्यात या कारोबारी आदेशों पर विचार करने की संभावना शामिल है।

कर और व्यापार नीति संबंधी: इनमें निर्यात लाभ योजनाओं के लिए ''सकल'' के स्थान पर ''निवल'' विदेशी मुद्रा का मानदण्ड प्रयुक्त करना, कर संबंधी कानूनों में भूतलक्षी प्रभाव के संशोधनों का मुद्दा जैसे कि कंप्यूटर सॉफ्टवेयर के इस्तेमाल के लिए किसी माध्यम के जरिए किन्हीं अधिकारों के भुगतान को शामिल करने के लिए रॉयल्टी की परिभाषा में संशोधन करना, धन-वापसी में होने वाली देरी से निपटने के लिए कर प्रशासन संबंधी उपाय, विदेशी पर्यटकों का धन-वापसी के लिए वैट (मूल्य वर्धित कर) शुरू करना और सेवाओं में निर्यात संवर्धन लाभ की सुविधा उठाने के लिए विगत निष्पादन के आधार पर बैंक गारंटी देने के मुद्दे के समाधान करना।

क्षेत्रवार मुद्दे:

पर्यटन और आतिथ्य क्षेत्र: वर्ष 2012 में विश्व पर्यटक अंतर्वाह में भारत का हिस्सा केवल 0.64 प्रतिशत (स्थान 41) था, जबकि संयुक्त राज्य अमेरिका का हिस्सा 6.47 प्रतिशत (स्थान 2) और चीन का हिस्सा 5.57 प्रतिशत (स्थान 3) था। विश्व पर्यटन व्यय में भारत का हिस्सा 1.65 प्रतिशत (स्थान 16) के स्तर पर अपेक्षाकृत अधिक था जिसका अर्थ है कि विदेशी पर्यटकों ने भारत में अपेक्षाकृत अधिक धन खर्च किया। सिंगापुर जैसे छोटे देश में वर्तमान समय में 11.10 मिलियन पर्यटक आते हैं। भारत जैसे बड़े देश में वर्ष 2013 में केवल 6.97 मिलियन विदेशी पर्यटक ही आए। सुझाए गए कुछ उपायों में ये शामिल हैं। सरकारी-निजी भागीदारी की भी सहायता लेकर विश्व स्तरीय पर्यटन अवसंरचना निर्मित करना। काराधान संबंधी अनेकानेक मुद्दों का समाधान करना। पर्यटकों की जरूरतों को पूरा करने के लिए कौशल और शिष्टाचार का प्रशिक्षण। पर्यटन स्थलों पर स्वच्छता पर और पर्यटकों की सुरक्षा पर विशेष बल; पर्यटन संबंधी अवसंरचना और सुविधाओं जैसी स्थायी परिसम्पतियां निर्मित करने के लिए महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी अधिनियम (एमजीनरेगा) का प्रयोग करना; महत्वपूर्ण पर्यटन स्थलों पर रोज़ाना लघु भारतीय सांस्कृतिक समारोह आयोजित करना जिनसे न सिर्फ पर्यटक आकर्षित होंगे बल्कि भारतीय कलाकारों के लिए भी रोजगार सृजित होगा; और 8 ''पूर्व संदर्भ'' देशों को छोड़कर, 180 देशों को 9 विमान पत्तनों पर आगमन पर वीजा (वीजा ऑन अराइवल) और ई-वीजा देने की योजना तत्काल आधार पर कार्यान्वित करना, ये निर्णय अब लिया जा चुका है।

पत्तन सेवाएं: भारत में आवश्यक ड्राफ्ट से युक्त विश्व स्तरीय पत्तन नहीं है। परिणामस्वरूप अत्याधुनिक जहाज पोताश्रय में दाखिल नहीं हो पाते हैं और माल को बाहर ही छोटे जहाजों में उतारना पड़ता है जिससे लागत में बढ़ोत्तरी हो जाती है। भारत ने विमान पत्तन अवसंरचना विकसित करने में और मेट्रो लाइन बिछाने में बहुत तरक्की की है। इसे विश्व-स्तरीय सेवाएं प्रदान करने वाले विश्व स्तरीय पत्तन निर्मित करने पर तत्काल ध्यान देना चाहिए जिससे लागत में और पत्तनों पर वापस जाने के समय (टर्न अराउंड) में कमी लाकर व्यापार क्षेत्र को भी मदद मिलेगी। भारत में अनेक पत्तन प्रभारों जैसे दूसरे मुद्दे भी हैं और भारत के पत्तन प्रभार अनेक विकसित देशों के प्रभारों की तुलना में काफी अधिक हैं।

पोत परिवहन, पोत निर्माण और पोत मरम्मत: यह देखते हुए भारत के विदेशी कार्गो के लदान में भारतीय जहाजों का हिस्सा तेजी से गिरा है और भारतीय जहाज पुराने हो रहे हैं, इसलिए नए जहाज लाकर पुराने जहाजों को बदलने की बड़ी जरूरत है। हालांकि हमारे जहाज़ी बेड़े को बढ़ाने के लिए यह समय अनुकूल है, लेकिन वैश्विक मंदी के कारण गिरती कीमतों के चलते वित्तपोषण का एक विशेष तंत्र बनाने की भी जरूरत है। यही बात भारत के पोतनिर्माण उद्योग के महत्व पर भी ध्यान केन्द्रित करती है जिसमें क्षमता और विशेषज्ञता तो है लेकिन वह क्षमता से कम कार्य कर रहा है। विशाखापत्तनम जैसे सरकारी स्वामित्वाधीन शिपयार्ड कम होते आर्डरों की समस्या का सामना कर रहे हैं। हमारे कई पुराने जहाजों को बदलने की जरूरत और जहाजों की मरम्मत के बढ़ते कारोबार के चलते भारत के पोत निर्माण और मरम्मत यार्डों का उपयोग करने के लिए और उनकी क्षमता को और बढ़ाने पर विशेष ध्यान दिया जा सकता है।

रेलवे: भारत की एफडीआई नीति में द्रुतगामी परिवहन प्रणालियों को छोड़कर रेल परिवहन में एफडीआई को प्रतिबंधित किया गया है। रेलवे में एफडीआई और निजीकरण अगले बड़ी लागत के महत्वपूर्ण सुधार हो सकते हैं। मौजूदा एफडीआई नीति में उपयुक्त परिवर्तन करने के लिए भारतीय रेलवे द्वारा एक प्रस्ताव की शुरूआत की गई है ताकि विश्व स्तरीय रेल अवसंरचना के निर्माण को प्रोत्साहित करने के लिए एफडीआई की अनुमति दी जा सके। इस प्रस्ताव में रेल परिचालनों को छोड़कर रेल क्षेत्र के सभी क्षेत्रों में एफडीआई की अनुमति देने की बात कही गई है। यहां तक कि रेल परिचालनों में भी उपनगरीय गलियारों में, हाई स्पीड ट्रेन प्रणालियों में और समर्पित फ्रेट लाइनों के लिए पीपीपी परियोजनाओं में एफडीआई का प्रस्ताव किया गया है। हालांकि रेलवे का निजीकरण जापान जैसे कुछ देशों में सफल रहा है, वहीं यूनाइटेड किंगडम जैसे कुछ देशों में यह असफल भी हुआ है। इसलिए इस प्रस्ताव की सावधानीपूर्वक जांच किए जाने की जरूरत है और जहां व्यवहार्य हो, वहीं शीघ्रतापूर्वक निजीकरण/एफडीआई की अनुमति दी जानी चाहिए।

स्रोत: डॉ॰ एच॰ए॰ प्रसाद, डॉ॰ सतीश और सलाम श्यामसुंदर सिंह (2014), वर्किंग पेपर 1/2014-डीईए 'इमर्जिंग ग्लोबल इकनोमिक सिचुएशन: ऑपरच्यूनिटीज एंड पॉलिसी इश्यूज फॉर सर्विसिज सेक्टर' और कुछेक मंत्रालयों और संस्थानों द्वारा किए गए अद्यतन।

चुनौतियां और संभावनाएं

चुनौतियां

10.52 सेवा क्षेत्र से प्रेरित भारत की आर्थिक विकास गाथा किसी भी विकासशील देश के लिए अद्भूत रही है। इस क्षेत्र की तात्कालिक चुनौती विकास का पुनरुद्धार करना है। जहां ऐसा सुधारों के जरिए और नीतिगत निर्णय लेने की प्रक्रिया में तेजी लाकर किया जा सकता है, वहीं बड़ी लागत की सेवाओं पर ध्यान देने का एक लक्षित दृष्टिकोण, जैसाकि बॉक्स 10.1 में उल्लेख किया गया है, से भारत में सेवा क्षेत्र के विकास में जबरदस्त उछाल आ सकता है। सॉफ्टवेयर और दूरसंचार जैसी कुछ सेवाएं बड़ी लागत की ऐसी सेवाएं हैं जिन्होंने भारत को सेवा क्षेत्र में ब्रांड छवि दी है। हालांकि इन सेवाओं पर और अधिक बल दिया जाना हमारी अग्रणी भूमिका को बनाए रखने तथा आगे बढ़ाने के लिए जरूरी है, फिर भी समय आ गया है कि हम कुछ और ऐसी उच्च लागत बढ़ाने के लिए जरूरी है, फिर भी समय आ गया है कि हम कुछ और ऐसी लागत की संभावित बड़ी सेवाओं पर ध्यान दें जो विनिर्माण क्षेत्र और रोजगार के साथ जुड़ी हैं। (बॉक्स 10.1)।

सॉफ्टवेयर और दूरसंचार जैसी कुछेक सेवाएं बड़ी लागत की ऐसी सेवाएं हैं जिन्होंने भारत को सेवा क्षेत्र में ब्रांड छवि दी है। समय आ गया है कि कुछ अन्य उच्च लागत सेवाओं पर ध्यान दिया जाए जो कि विनिर्माण क्षेत्र और रोजगार के साथ जुड़ी हैं।

संभावनाएं

10.53 भारत का सेवा क्षेत्र में, जो 2005-06 से 10 प्रतिशत से अधिक स्थिर दर पर बढ़ रहा था, पिछले तीन वर्षों में निष्पादन मंद रहा है। वर्ष 2008 की आर्थिक मंदी के दौरान और उसके बाद भी सेवा क्षेत्र में जो समुत्थानशीलता देखी गई थी, वह अब मद्धिम पड़नी शुरू हो गई है, हालांकि सेवा क्षेत्र की वृद्धि दर अन्य क्षेत्रों की तुलना में अभी भी अधिक है। जहां विनिर्माण और खनन क्षेत्रों में व्याप्त मंदी ने रेलवे, पोत परिवहन, पत्तनों जैसी कुछ सेवाओं को सीधे और मजबूत सम्पर्की प्रभाव के कारण अन्य संबंधित सेवाओं को प्रभावित किया, अन्य सेवाएं वैश्विक एवं घरेलू दोनों ही प्रकार की आय वृद्धि में हुई मंदी से प्रभावित हुई।

10.54 सामुदायिक और सामाजिक सेवाओं का निष्पादन भी फीका रहा, जिनमें छठे वेतन आयोग की सिफारिशों के बाद सरकारी कर्मचारियों को बकाया राशि का भुगतान किए जाने चलते 2008-09 और 2009-10 में जबरदस्त वृद्धि देखी गई थी और इनके परिणामस्वरूप लोक प्रशासन और रक्षा श्रेणी में उच्च वृद्धि हुई थी। तथापि, वित्त पोषण, बीमा और स्थावर सम्पदा तथा अन्य कारोबारी सेवाओं तथा लोक प्रशासन एवं रक्षा क्षेत्र को छोड़कर सामुदायिक, सामाजिक एवं वैयक्तिक सेवाओं जैसे कुछ महत्वपूर्ण सेवाओं द्वारा किए गए अच्छे निष्पादन ने पिछले तीन वर्षों में सेवा क्षेत्र की वृद्धि दर को 7 या लगभग 7 प्रतिशत के साधारण स्तरों तक ला दिया।

10.55 भविष्य की बात करें तो वर्ष 2014-15 कारोबारी गतिविधि के विस्तार के चलते सेवा क्षेत्र के लिए अच्छे संकेत दे रहा है जैसाकि एचएचबीसी की भारत के लिए ''सर्विसेज बिजनेस एक्टिविटी इंडेक्स' द्वारा भी इंगित किया गया है। कुछ एयरलाइनों द्वारा इस क्षेत्र से वापस हटने और उनके द्वारा उठाई गई हानियों की हलचल के बाद एयर एशिया और टाटा-एसआईए एयरलाइन जैसे नए भागीदारों के आगमन की घोषणा के चलते विमानन क्षेत्र में भी विकास के पुनरूद्धार के संकेत दिखाई दे रहे हैं। विश्व के सकल घरेलू उत्पाद और व्यापार वृद्धि में सामान्य तौर पर और विशेष तौर पर विकसित देशों में इसी वृद्धि के पुनरूद्धार के संकेत पर्यटन और पोत परिवहन क्षेत्रों के सुधार में सहायक हो सकते हैं। अब एक स्थिर सरकार के बनने और उभरती उम्मीदें जो निवेश और विकास में रूपांतरित हो सकती हैं; सेवा क्षेत्र में कुछ बाधाओं और पुराने विनियमों को हटाने और कुछ तत्काल सुधारों से लाभ हो सकता है। लेकिन क्षीण वैश्विक स्थिति एक बड़ा जोखिम है।

2014-15 में सेवा क्षेत्र के पुनः बहाली के संकेत हैं। कुछ त्वरित सुधार और बाधाओं को हटाने और पुराने विनियमों में और अधिक सुधार हो सकता है।